राजा टुट कौन थे?

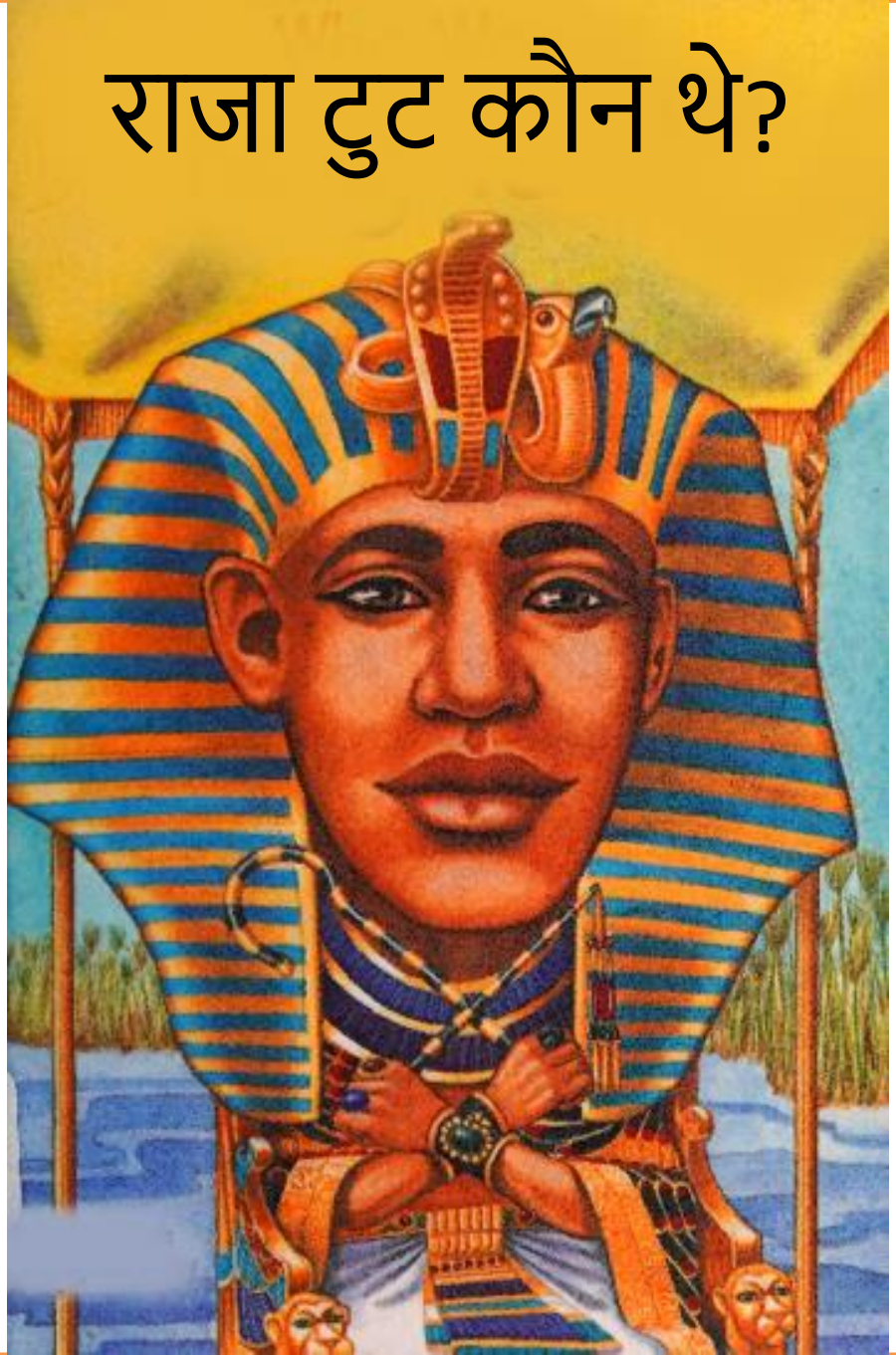

राजा टुट कौन थे?

रॉबर्टा एडवर्ड्स

चित्र : केली

विषयवस्तु

राजा टुट कौन थे?
नील नदी के उपहार
एक असामान्य पिता
युवा राजा
जल्दी मौत
मृत्यु के बाद का जीवन
ममी बनाना
राजाओं की घाटी
ममी का उन्माद
होवर्ड कार्टर
हर जगह सोना
राजा से मिलन
किंग टुट की दंतकथा अभी भी ज़िंदा है

किंग टुट कौन थे?

जून 2005 में, कैलिफोर्निया, फिरौन के बुखार से प्रभावित हुआ. केवल एक महीने में, लॉस एंजिल्स काउंटी म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट में पांच लाख लोग आए. वे चमकदार आभूषण और घरेलू सामान देखना चाहते थे जो कभी मिस्र के एक राजा के थे.

वे सुंदर फर्नीचर, लैंप, संगीत वाद्ययंत्र और बोर्ड गेम देखने के लिए घंटों कतार में खड़े रहे. इतने अधिक लोग आए, कि संग्रहालय रात ग्यारह बजे तक खुला रहा.

वहां एक छोटी कुर्सी थी जो राजा बचपन में इस्तेमाल करते थे. एक रथ था, जिस पर वो सवारी करते थे.

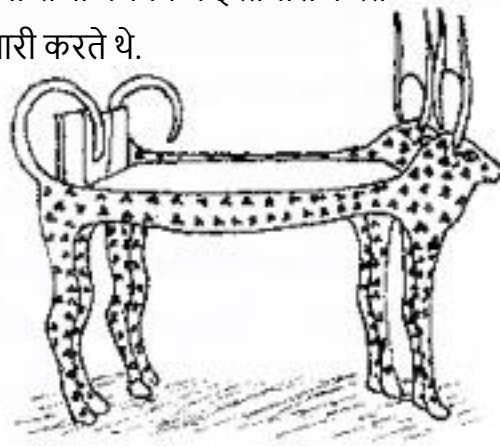

दो गायों के आकार का एक सोफ़ा था. राजा टुट के ताबूत जिसमें कभी उनके शरीर रखा गया था वे भी प्रदर्शन पर थे - एक ताबूत ठोस सोने का बना था. पंखे, फूलदान, कुर्सियों और कपड़ों सहित वहां पर लगभग एक सौ पच्चीस वस्तुएं प्रदर्शन पर थीं.

हालांकि कई चीजें बिल्कुल नई लग रही थीं, लेकिन वे नई नहीं थीं. वे तीन हजार वर्ष से अधिक पुरानी थीं. इतने लम्बे अर्से तक वो सब कुछ मिस्र की रेत के नीचे एक गुप्त कब्र में छिपा रहा था.

बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में, होवर्ड कार्टर नाम के एक व्यक्ति ने राजा टुट के मकबरे की खोज में वर्षों बिताए. वो राजा का नाम जानता था: तूतनखामुन. और उसे लगभग वो स्थान पता था जहाँ राजा को दफनाया गया था. अंत में, 1922 में, जब वो हार मानने वाला ही था तब उसने सफलता हासिल की.

इस खोज की सुर्खियां पूरी दुनिया में फैलीं. इससे पहले, राजा तूतनखामुन के बारे में कभी किसी ने सुना तक नहीं था. अचानक, सभी की जुबान पर उनका नाम था. लोग संक्षेप में उन्हें किंग "टुट" बुलाने लगे.

आज, किंग टुट शायद सभी फिरौन में सबसे प्रसिद्ध है. फिर भी वो कोई महत्वपूर्ण या बहुत शक्तिशाली शासक नहीं था. वो केवल नौ साल के लिए ही फिरौन रहा. हम जानते हैं कि उसने शादी की थी. लेकिन, हम यह नहीं जानते हैं कि उसके बच्चे थे या नहीं.

टुट की मृत्यु बहुत ही कम उम्र में हुई थी - जब वो अठारह या उन्नीस वर्ष का था. और उनकी मौत का कारण आज भी एक रहस्य बना हुआ है. कुछ इतिहासकारों के अनुसार शायद किसी ने उसकी हत्या की हो.

यह सोचना कुछ अजीब लगता है कि जो सामान उसके साथ दफनाया गया था, उसके कारण ही वो प्रसिद्ध हुआ. लेकिन उसकी कब्र की सभी खूबसूरत चीजें महत्वपूर्ण हैं. उन वस्तुओं से हमें पता चलता है कि प्राचीन मिस्र में जीवन कैसा था. और उनसे हम किंग टुट की एक तस्वीर भी बना सकते हैं.

अध्याय 1

नील नदी के उपहार

जब टुट का जन्म हुआ, लगभग 1343 ईसा पूर्व, उस समय मिस्र पहले से ही एक बहुत पुराना देश था. वो देश लगभग दो हजार साल पुराना था.

मिस्र का साम्राज्य मेडीटरेरियन-सागर के सामने उत्तरी अफ्रीका के तट पर स्थित था. यह रेगिस्तान और नंगी पहाड़ियों का देश था, जहाँ पूरे साल भर सूरज तपता रहता था.

वहां पर बहुत कम पेड़ थे. और बारिश भी कभी-कभी ही होती थी.

पर नील नदी - जो उत्तर और दक्षिण तक बहती थी उसने देश को दो भागों में बांटा था. नील दुनिया की सबसे लंबी नदी है - चार हजार मील से कुछ अधिक लंबी. वो प्राचीन मिस्र का दिल थी.

नली नदी के दोनों किनारों पर समृद्ध खेत थे. किसान बैलों द्वारा खींचे गए हलों से अपने खेतों को जोतते थे. वे गेहूं और सब्जियां उगाने के लिए मिट्टी में बीज छिड़कते थे. वे सूअरों, बकरियों और भेड़ों को पालते थे. वे फलों के पेड़ लगाते और अंगूर उगाते थे. नदी, खाने के लिए मछलियाँ और शिकार करने के लिए लोगों को बत्तखें भी देती थी.

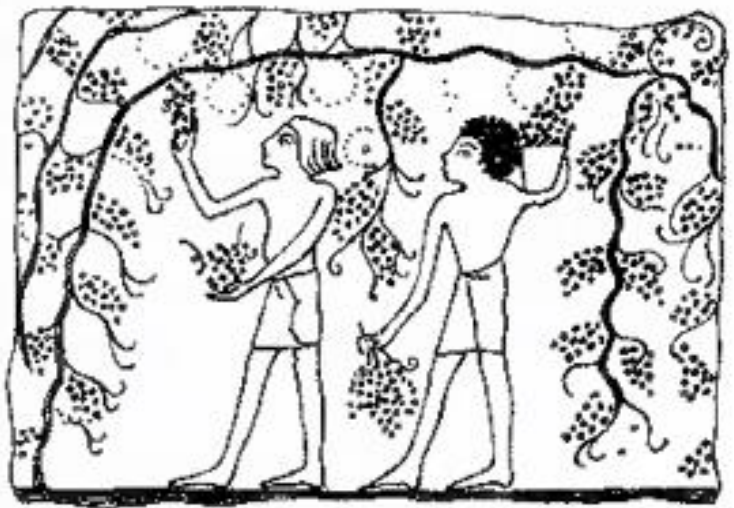

वार्षिक बाढ़ के कारण, कई सप्ताह ऐसे भी होते थे जब किसान काम नहीं कर पाते थे. इसलिए, नदी सभी को "छुट्टी" भी देती थी!

नली नदी वो "सड़क" थी जो नावों द्वारा एक शहर से दूसरे शहर तक माल ले जाती थी. नील की मिट्टी का उपयोग करके घरों के निर्माण किया जाता था. थेब्स और मेम्फिस जैसे सभी महान शहर, नली नदी के पास ही फले-फूले थे. प्राचीन मेम्फिस शायद पहला दुनिया का पहला शहर था जिसकी आबादी एक लाख लोगों से अधिक थी.

खदानों से, चट्टानों और पत्थरों के भारी ब्लॉक बजरे पर लाए जाते थे. उनका उपयोग महान मंदिरों और मूर्तियों के निर्माण के लिए किया जाता था, जिनमें से कुछ आज भी खड़े हैं.

नदी लोगों की जीवनदायिनी थी. नदी के बिना कोई प्राचीन मिस्र नहीं होता. फिर वो बस रेगिस्तान ही बना रहता. लेकिन रेगिस्तान भी महत्वपूर्ण था. उसने मिस्र की रक्षा की. दुश्मनों के लिए हमला करना मुश्किल था. भीषण गर्मी में उन्हें मीलों तपती रेत पार करनी पड़ती.

मिस्र का साम्राज्य

एक समय में वो साम्राज्य वर्तमान मिस्र से दक्षिण तक फैला हुआ था जो आज का इथियोपिया है, पूर्व में सिनाई प्रायद्वीप तक, और उत्तर में लेबनान और तुर्की तक फैला हुआ था.

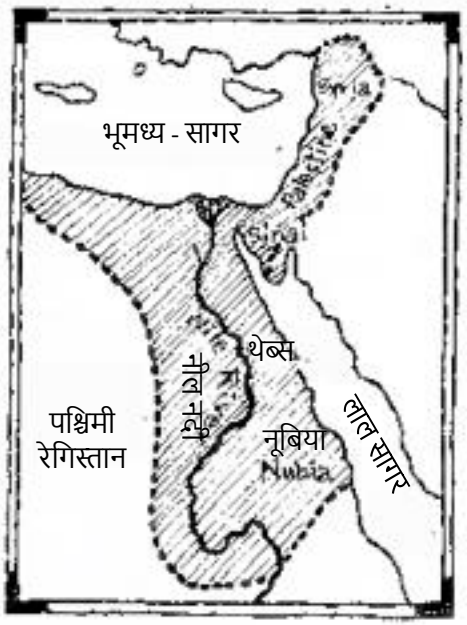

इन अन्य देशों से हाथीदांत, फर, सोना, देवदार की लकड़ी और अन्य चीज़ें आती थीं. लेकिन साम्राज्य बहुत अधिक बढ़ने के बाद भी मिस्र की जीवन शैली काफी हद तक वैसी ही रही. मिस्रवासियों ने अन्य लोगों के रीति-रिवाजों या कलाओं को अपनाया नहीं. हजारों वर्षों से, वे जिस पर वे विश्वास करते थे, उसमें बहुत कुछ नहीं बदला था.

उदाहरण के लिए, उनका शासक फिरौन (फेरो) था. इस शब्द का मूल अर्थ "महान घर" था - जहां राजा रहता था. जैसे-जैसे समय बीतता गया, इसका अर्थ स्वयं राजा होता चला गया. लेकिन फिरौन एक राजा से कहीं अधिक था. फिरौन सर्वोच्च पुजारी और न्यायाधीश भी था. वो देवताओं का पुत्र माना जाता है. मृत्यु के बाद, वो खुद एक देवता बन जाता था. लोग उसकी पूजा करते थे.

फिरौन के मुकुट

1343 ई.पू. का सही दिन कोई नहीं जानता जब टुट का जन्म हुआ. उसके माता-पिता कौन थे? यह भी पक्का नहीं पता है. उनके पिता शायद फिरौन अमेनहोटेप IV थे. फिरौन की कई पत्नियाँ थीं. टुट की माँ अमेनहोटेप की कम महत्वपूर्ण पत्नियों में से एक रही होगी.

जब टुट दस साल के थे, तब तक उनकी शादी हो चुकी थी. उनकी पत्नी फिरौन की बेटियों में से एक थी. उसका नाम अंकसेनमुन था. तब तक टुट के पिता का देहांत हो चुका था और टुट राजा बन गया. उसने फिरौन का लम्बा मुकुट पहना था. सभी फिरौन की तरह, उसने अपनी ठुड्डी से बंधी झूठी दाढ़ी भी बाँधी थी. उसने एक टेढ़ी लाठी और एक चाबुक कमाया (जो एक कोड़े जैसा दिखता था). वे उसकी शक्ति के प्रतीक थे. लेकिन क्या उसके पास वास्तविक शक्ति थी? नहीं, क्योंकि वो अभी सिर्फ एक बच्चा था.

अध्याय दो

एक असामान्य पिता

मिस्र पर शासन करने वाले सभी फिरौन में से, टुट के पिता शायद सबसे अजीब थे.

सबसे पहले, वो देखने में काफी अजीब थे. अमेनहोटेप के सिर का आकार काफी अजीबोगरीब था. वो बहुत लंबा और संकरा था. और उनके कूल्हे एक आदमी के लिए बहुत बड़े थे. क्या वो ऐसे किसी बीमारी के कारण थे? कुछ इतिहासकार ऐसा सोचते हैं.

खुद बदसूरत होने के बावजूद अमेनहोटेप ने एक बेहद खूबसूरत रानी से शादी की थी. दो संग्रहालयों में, पहला काहिरा में और दूसरा बर्लिन में, उनकी एक-एक प्रतिमा रखी है. उनकी पत्नी का नाम नेफ़र्टिटी था. हालांकि वो शाही परिवार में जन्मी नहीं थी, नेफ़र्टिटी हर इंच किसी रानी जैसी दिखती थी.

नेफ़र्टिटी फिरौन की मुख्य पत्नी बन गई. प्राचीन मिस्र में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार नहीं थे. उदाहरण के लिए, महिलाएं स्कूल नहीं जाती थीं. लेकिन नेफ़र्टिटी एक शक्तिशाली महिला थी. वह अपने पति की एक महत्वपूर्ण सलाहकार भी थी.

जब उसने बदलाव करने का फैसला किया तो उसने उसका समर्थन किया.

एक महिला फिरौन

हालांकि प्राचीन मिस्र में महिलाएं पुरुषों के बराबर नहीं होती थीं, 1504 ई.पू. एक महिला फिरौन बन गई. उसका नाम हत्शेपसट था. फिरौन की अचानक मृत्यु के बाद उसने सत्ता संभाली. फिरौन केवल एक ही युवा बेटे (थुटमोस III) को पीछे छोड़कर गए.

हम हत्शेपसट के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, वो हमें चित्रों से ही पता है. सबसे पहले, वो एक विशिष्ट पोशाक में दिखती है. लेकिन बाद में उसे फिरौन का ताज पहने दिखाया गया है. वो फिरौन की झूठी दाढ़ी भी पहने है. हत्शेपसट ने कई महान भवन परियोजनाएं शुरू कीं. लेकिन उसकी मृत्यु के बाद लगभग 1450 ई.पू. में थुटमोस III फिरौन बना. उसने हत्शेपसट के सभी रिकॉर्ड मिटाने की पूरी कोशिश की.

अमेनहोटेप ने किस प्रकार के परिवर्तन किए?

प्रमुख बात थी कि उसने धर्म बदलने का फैसला किया. सैकड़ों वर्षों तक, मिस्र के लोगों ने कई देवी-देवताओं की प्रार्थना की थी. कुछ देवता लोगों की तरह लगते थे. और कुछ जानवर लगते थे. कुछ का जानवर का सिर और मानव का शरीर था.

थॉट - जो चन्द्रमा का देवता था. अनुबिस कब्रिस्तानों के देवता थे. आइसिस एक देवी थी जो बच्चों की रक्षा करती थी.

थॉट

अनुबिस

आइसिस

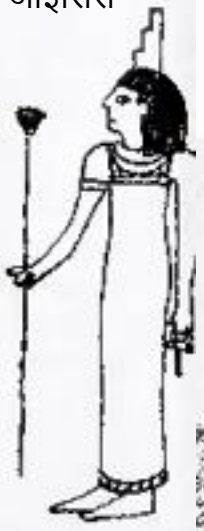

कुल मिलाकर, लगभग एक हजार विभिन्न देवता थे. कुछ तो केवल स्थानीय देवता थे. लेकिन महत्वपूर्ण देवताओं के पास उनके लिए समर्पित महान मंदिर थे. लोग मंदिरों में जा सकते थे और देवताओं से मदद के लिए प्रार्थना कर सकते थे. (आम लोगों को, हालांकि, मंदिरों में अंदर जाने की अनुमति नहीं थी.)

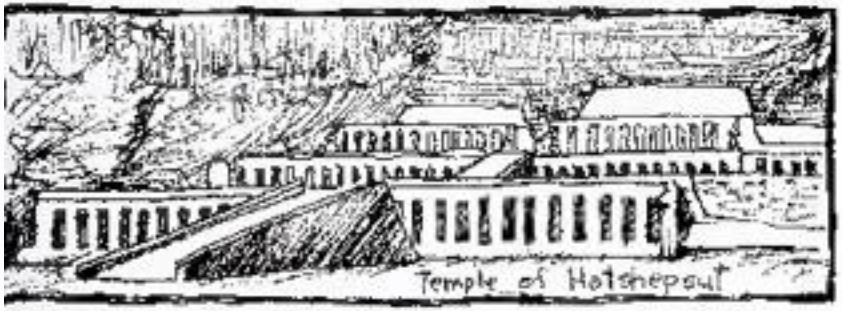

सबसे महत्वपूर्ण देवता - सूर्य देवता अमुन-रा थे. वो मानव रूप में प्रकट हुए थे. वो प्रतिदिन अपने रथ को आकाश में घुमाते थे.

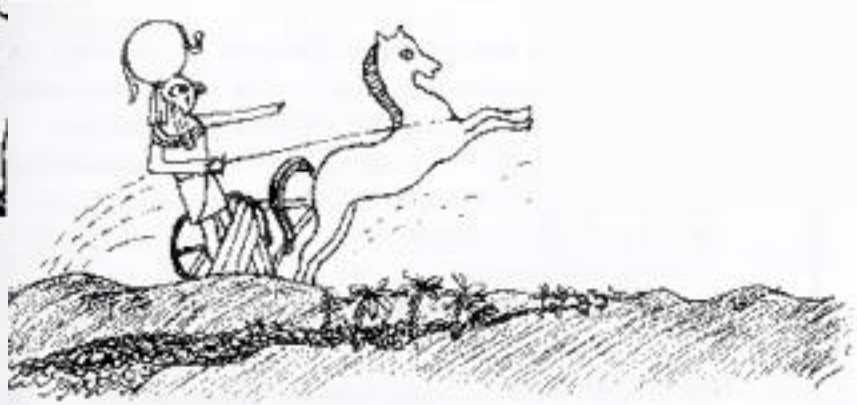

देवी देवता

ओसिरिस, आइसिस, सेठ और होरस भी बहुत शक्तिशाली देवी-देवता थे. ये चारों उस मिथक का हिस्सा हैं कि पृथ्वी और अंडरवर्ल्ड (पाताललोक) की शुरुआत कैसे हुई. मिथक के अनुसार, ओसिरिस और आइसिस पृथ्वी के राजा और रानी थे. उनका एक बेटा था जिसका नाम होरस था. लेकिन ओसिरिस का भाई ईर्ष्यालु था और वो पृथ्वी पर शासन करना चाहता था. उसका नाम सेठ था. इसलिए, उसने ओसिरिस को मार डाला और उसे अंडरवर्ल्ड में भेज दिया,

माता-पिता, बेटा और उसके चाचा

हालांकि. ओसिरिस के बेटे (होरस) ने सेठ से राज्य वापस ले लिया. अब होरस पृथ्वी का राजा बन गया. उसके पिता, ओसिरिस अंडरवर्ल्ड (पाताललोक) के राजा बन गए. सेठ को एक काल्पनिक जानवर के सिर के साथ दिखाया गया था जो एक कुत्ते की तरह दिखता है. वो रेगिस्तान का देवता था.

मृतकों के देवता ओसिरिस को हमेशा एक ममी की तरह कसकर लपेटा जाता था.

आइसिस को बच्चों और जरूरतमंद लोगों की रक्षा करने वाला माना जाता था.

होरस का एक बाज का सिर था और वो आकाश का देवता था. मिस्र के लोग मानते थे कि फिरौन, होरस का पुत्र था.

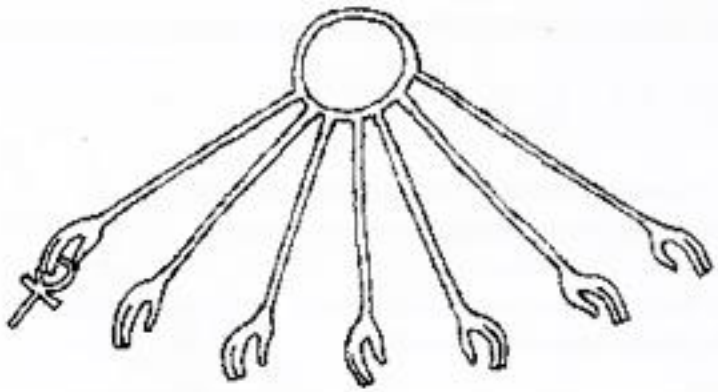

अमेनहोटेप ने सभी देवी-देवताओं को खत्म करने का फैसला किया. उसके बाद से लोगों का केवल एक ही देवता होने वाला था. वो देवता सूर्य देवता था. लेकिन वो अमुन-रा की तरह मानव रूप में प्रकट नहीं हुआ. उसकी बजाए, वो सूर्य एक चकती जैसा दिखता था. उसमें से सूर्य की किरणें फैलती हैं. और प्रत्येक किरण के अंत में एक हाथ होता था. हाथ इस बात के संकेत थे कि भगवान, मिस्र के लोगों पर नजर रखे हुए थे. भगवान का नाम एटेन-रा था.

फिरौन का मानना था कि वो पृथ्वी पर, एटेन-रा का दूत था. उसके माध्यम से ही लोग भगवान तक पहुंच सकते थे.

अमेनहोटेप ने देवी-देवताओं की पूजा करने वाले सभी पुजारियों से छुटकारा पा लिया. मंदिरों का पैसा अब एटेन-रा को जाता था. अमेनहोटेप ने अपना नाम बदल लिया (अखेनातेनमें). उनके नए नाम का अर्थ था "एटेन का नौकर." नेफ़र्टिटी ने भी अपना नाम बदल दिया (वैज्ञानिक मानते हैं कि उसका नया नाम नेफ़र्नफ्रूटेन था). इस नए नाम का अर्थ था "एटेन की दयालु देवी."

शाही परिवार ने थेब्स शहर छोड़ दिया और एक नई राजधानी का निर्माण किया. उसका नाम अमरना था. यहीं पर टुट ने अपना बचपन बिताया. वहीँ पर वो नई मान्यताओं को सीखते हुए बड़ा हुआ.

अमरना शहर, नील नदी के दोनों ओर आठ मील तक फैला हुआ था. यहाँ फिर से, अमेनहोटेप ने कुछ अलग किया.

आमतौर पर, नदी के पश्चिम की भूमि वो होती थी जहाँ मृतकों को दफनाया जाता था. क्यों? क्योंकि सूरज हर शाम पश्चिम में अस्त होता था. जैसे सूर्यास्त से दिन का अंत होता है, वैसे ही मृत्यु भी जीवन के अंत का प्रतीक थी. इसलिए, मृतकों को पश्चिमी भूमि में दफनाया जाता था. लेकिन अमेनहोटेप ने नए शहर में इसका बिल्कुल उल्टा करने का फैसला किया. नदी के पूर्व में एक कब्रिस्तान बनाया गया. अमरना के पश्चिम में लोग रहते थे. नए घरों और महलों के साथ-साथ नए मंदिरों का निर्माण किया गया, सभी एटेन-रा के लिए.

इससे पहले, मंदिरों में लंबे हॉल होते थे, जिसके कारण अंदर के कमरों में अंधेरा होता था. यहीं पर पुजारी प्रार्थना करते थे. एटेन-रा के नए मंदिर खुली हवा में बने भवन थे जिनपर सूर्य का दिव्य प्रकाश पड़ता था.

फिरौन चित्रों की शैली को भी बदलना चाहता था. पुरानी शैली में कलाकारों को कई नियमों का पालन करना पड़ता था. तब किसी शख्स को हमेशा साइड से दिखाया जाता था. प्रोफ़ाइल में हमेशा एक सिर दिखाया जाता था, जिसमें एक आंख सीधे दर्शक को देखती थी. एक व्यक्ति का चेहरा हमेशा युवा और परिपूर्ण दिखता था. कोई झुर्रियाँ या भूरे बाल नहीं होते थे! दोनों कंधे हमेशा सामने की ओर होते थे, लेकिन धड़ को प्रोफ़ाइल में दिखाया जाता था. पैर हमेशा सीधे एक-दूसरे के सामने रखे जाते थे. चित्र अक्सर बहुत सुंदर होते थे, लेकिन उनमें लोग कभी भी प्राकृतिक या तीन-आयामी नहीं दिखते थे.

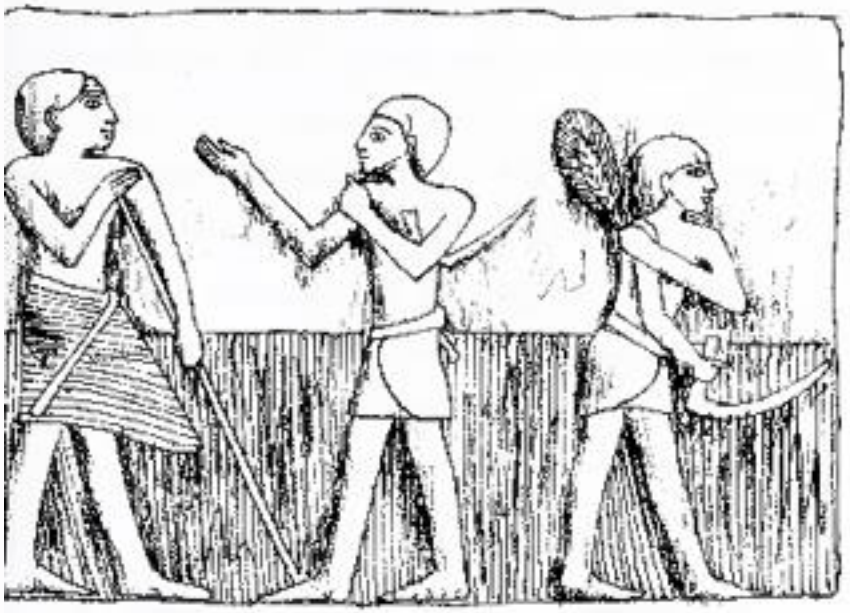

कलाकारों के लिए इतने नियम क्यों थे? प्राचीन मिस्रवासियों मानते थे कि किसी मृत व्यक्ति की पेंटिंग में भी जान आ सकती थी. इसलिए, चित्र में शरीर के सभी अलग-अलग हिस्सों को शामिल करना जरूरी था. चित्र में किसी एक हाथ या पैर को छोड़ा नहीं जा सकता था. चित्रों में लोग युवा और स्वस्थ दिखना चाहते थे, न कि बूढ़े या बीमार.

लेकिन अमेनहोटेप ने नियमों को बदलने का फैसला किया. वो अपने लंबे सिर और संकीर्ण आंखों के साथ, वास्तव में जैसे दिखते थे वो उन्हें उसी तरह चित्रित किया जाना चाहता था.

वो यह भी चाहता था कि लोगों की पेंटिंग औपचारिक की बजाए अधिक प्राकृतिक लगे. इतना ही नहीं. एक पेंटिंग में अमेनहोटेप और उनकी पत्नी को अपनी छह छोटी बेटियों में से तीन के साथ प्यार से खेलते हुए दिखाया गया है. ऐसा कुछ पहले कभी नहीं दिखाया गया था.

हालाँकि, परिवर्तन लंबे समय तक नहीं चले. अमेनहोटेप की मृत्यु के तुरंत बाद उन्हें तुरंत रोक दिया गया. (वो लगभग सोलह वर्षों तक फिरौन रहा.) अमरना का नया शहर जल्द ही वीरान हो गया. पुराने रीति-रिवाजों वापस आए.

यह पूरे देश के लिए बहुत ही भ्रमित करने वाला समय रहा होगा. जब लोगों को बदलावों की आदत हो रही थी, तो उनसे उन्हें भूल जाने के लिए कहा गया. अगर टुट पहले से ही एक व्यस्क होता, तो भी उसके लिए फिरौन बनना मुश्किल होता.

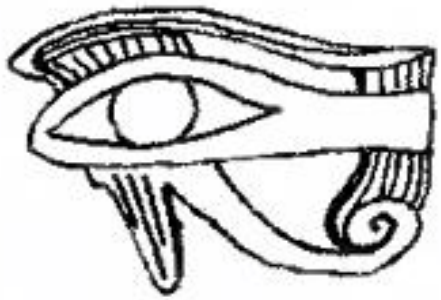

होरस की आंखें
बुराई को दूर भगाती हैं.

अध्याय 3

बच्चा राजा

फिर भी, प्राचीन मिस्र में पलना और बढ़ना सुखों से भरपूर था. खासकर अगर कोई शाही परिवार से ताल्लुक रखता हो. लेकिन वो एक राजकुमार पैदा हुआ था. और उसने अपना बचपन अमरना के नए निर्मित महल में बिताया था.

मिस्र के महल बहुत विशाल थे. महल के सभी मैदानों में सुंदर उद्यान और झीलों के आकार के विशाल ताल थे.

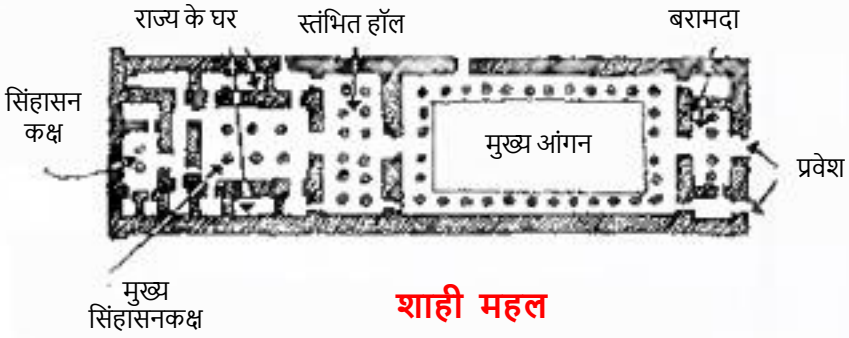

शाही महल

बाहर से वही महल

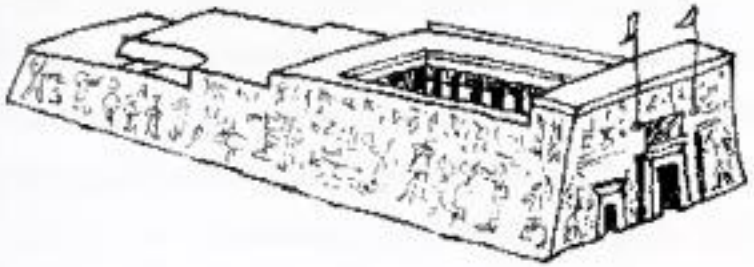

महल की इमारतें ईंट से बनी थीं और सफेद प्लास्टर से ढकी हुई थीं. दीवारों को रंग-बिरंगे चित्रों से सजाया गया था. फिरौन की पत्नियों के लिए अलग-अलग भवन थे.

नौकर टुट की सभी जरूरतों का ख्याल रखते थे. हर दिन वे उसका खाना लाते थे. किसान रोटी खाते और बीयर पीते थे. लेकिन शाही राजकुमार को खाने को मांस और सब्जियां मिलती थीं, साथ में अंजीर और खजूर भी. मिस्र के उत्तर में उगाए गए अंगूरों, खजूरों, अंजीरों और अनारों से शराब बनाई जाती थी.

उसके सेवक उसे नहलाते और कपड़े पहनाते थे. उन्होंने उसका सिर मुंडवाया, जिससे केवल बालों की एक चोटी ही बची रही. वो एक राजकुमार का विशिष्ट हेयर स्टाइल था. जब वो सो रहा होता था, तो शुतुरमुर्ग-पंखों से उसे पंखा किया जाता था. इस तरह, गर्मी उसे परेशान नहीं करती थी.

नील नदी में मगरमच्छ रहते थे. इसलिए, जब भी टुट तैरता था, तब गार्ड बराबर निगरानी रखते थे. बड़ा होने के बाद वो खुद अपने रथ पर सवारी कर सकता था. अच्छे घोड़े उसके रथ को खींचते थे. या फिर वो नाव में बैठकर नील नदी की यात्रा का आनंद ले सकता था.

टुट धनुष-बाण लेकर और अपने शिकारी कुत्तों के साथ शिकार करने भी जाता था.

रेगिस्तान में, टुट गोली मारकर किसी शुतुरमुर्ग का शिकार कर सकता था. नदी के पास शिकार करने के लिए बत्तखें थीं. जाहिर तौर पर टुट को "सेनेट" नामक एक लोकप्रिय बोर्ड गेम खेलना पसंद था. (उसने सुनिश्चित किया कि उसकी कब्र में उसके चार सेट रखे जाएँ.)

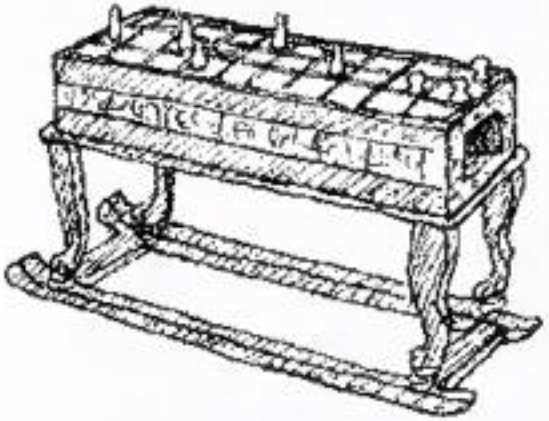

क्या टुट को संगीत बजाना पसंद था? शायद ऐसा हो. उसकी कब्र में तुरहियां मिलीं. अगर वो खुद नहीं बजाता होगा, तो संगीतकार उसके लिए वाद्य बजाते होंगे.

वे वीणा, लूट (वाद्ययंत्र) और पाइप बजाते होंगे. वहां पर भीषण गर्मी के कारण, राजकुमार और राजकुमारियां भी हल्के, साधारण कपड़े पहनते थे.

तूतनखामुन की पेंटिंग्स में टुट को सफेद लिनन के कपड़ों में देखा जा सकता है.

उसके कपड़े साधारण थे, लेकिन उसके आभूषण बहुत भव्य थे. उसने भारी सोने के कंगन और अंगूठियां पहनी थीं. कुछ मोतियों और सोने के हार इतने बड़े थे कि वे उसकी छाती को ढँक देते थे. उसकी पत्नी ने भी बहुत सारे भारी-भरकम सुंदर आभूषण पहने थे. अन्य शाही बच्चे भी ऐसा ही करते थे.

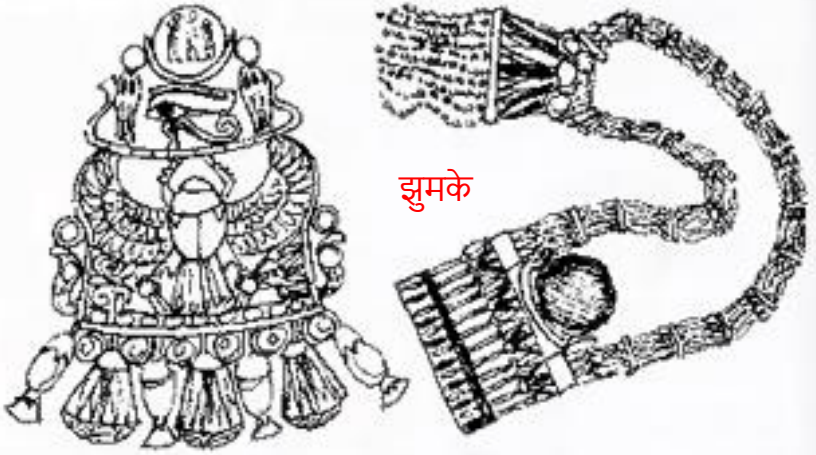

तब युवा लड़के भी भारी-भारी झुमके पहनते थे. (समाधि में टुट के लिए दो जोड़ी झुमके रखे गए थे.)

लिखित भाषा विकसित करने वाला पहला देश प्राचीन मिस्र था. चार साल की उम्र से ही लड़के पढ़ना-लिखना सीखते थे. क्या टुट को पढ़ना-लिखना आता था? शायद. उसकी कब्र के अंदर लेखन सामग्री रखी गई थी. टुट के लिए एक सुंदर ब्रश केस रत्नों के साथ सोने की पन्नी में ढकी लकड़ी से बनाया गया था. यदि टुट का खुद लिखने का मन नहीं होता, तो वो अपनी बातों को किसी मुंशी से लिखवा सकता था.

मुंशी का काम फिरौन के सभी आदेशों और पत्रों को लिखना था.

मिस्रवासियों के पास पेन या पेंसिल नहीं थीं. उसकी बजाए, वो एक ईख लेकर उसके एक अंत को चबाते थे. जब टिप एक कूची जैसी बन जाती, तो वे उसे एक ब्रश जैसे इस्तेमाल करते थे. काली स्याही कालिख या चारकोल से बनाई जाती थी. स्याही एक छोटे, गोल ब्लॉक में आती थी. किसी छात्र को पहले ब्रश को पानी में डुबाना पड़ता था और फिर उसे स्याही के ब्लॉक पर रगड़ना होता था.

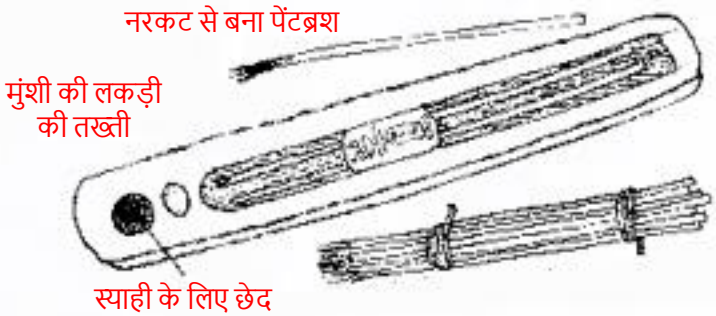

मिस्रवासी नील नदी के किनारे पेपिरस के पौधों से एक प्रकार का भारी कागज़ बनाते थे. (हमारा शब्द "पेपर" "पेपिरस" से ही आया है) वो पौधे के तने को लंबी पट्टियों में काटते थे. फिर पट्टियों को दो परतों में, क्रॉस तरीके से, एक-के-ऊपर एक करके सजाते थे और फिर उन्हें एक हथौड़े से पीसते थे. जब सारा रस बाहर निकल जाता था तो दोनों परतें एक चादर बन जाती थीं. फिर उसे एक भारी पत्थर के नीचे तब तक रखा जाता था जब तक कि कागज़ पूरी तरह सूखकर चपटा न हो जाए. आखिरी बार पेपिरस शीट को चिकना बनाने के लिए एक पत्थर से आगे-पीछे रगड़ा जाता था.

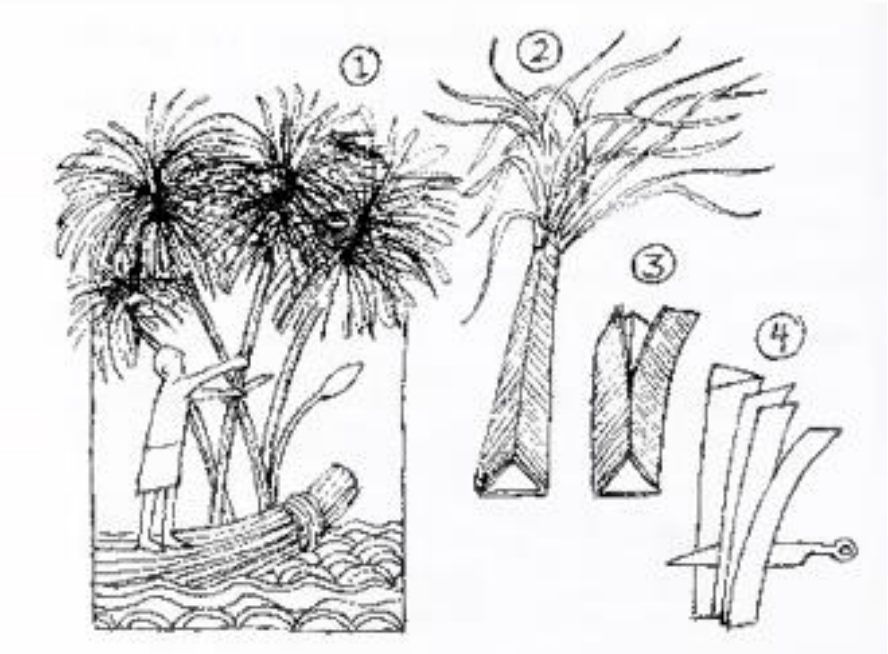

पेपिरस के पन्नों को किताबों में बांधने के बजाए, उन्हें गोल-गोल स्क्रॉल में घुमाया जाता था. पेपिरस का बना कागज़ बहुत मजबूत होता था. कुछ ऐसे स्क्रॉल मिले हैं जो हजारों साल पुराने हैं. वे अभी भी अच्छी स्थिति में हैं. पेपिरस पर लिखाई को मिटाना भी आसान था. किसी गलती से छुटकारा पाने के लिए बस पानी की एक बूंद की जरूरत थी.

एक बच्चे के रूप में, टुट ने शायद लिखना सीखते हुए बहुत सारी गलतियाँ की होंगी. अंग्रेजी वर्णमाला में केवल छब्बीस अक्षर होते हैं. पर उस ज़माने में लगभग एक हजार अलग-अलग प्रतीक होते थे जिन्हें "चित्र-लिपि" कहा जाता था. चित्रलिपियां अक्षरों से अधिक चित्रों की तरह दिखती थीं.

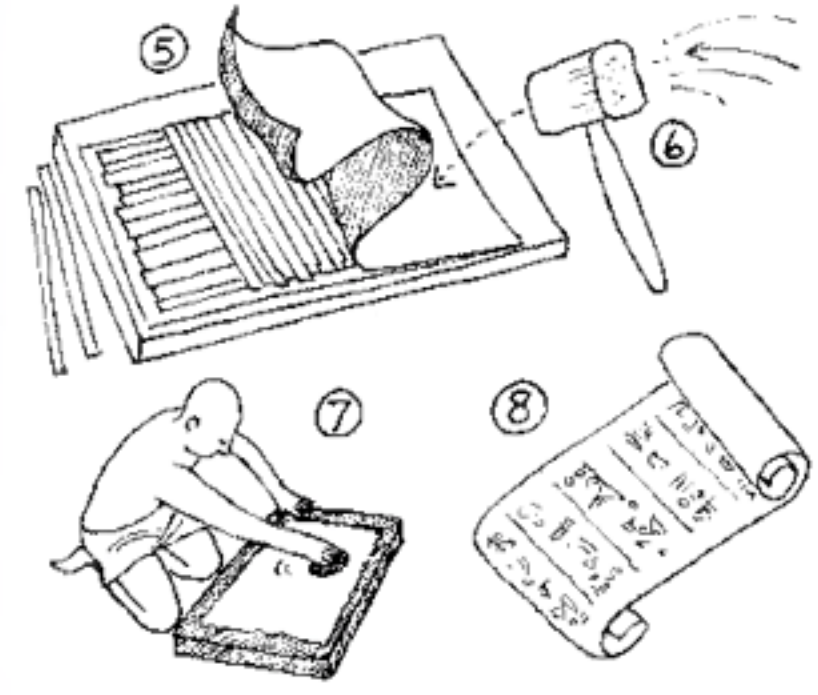

मिस्र के प्राचीन साम्राज्य के समाप्त होने के बाद, कई शताब्दियों तक चित्र-लिपि का अर्थ खो गया. कोई भी उस चित्र-लिपि लेखन का अनुवाद नहीं कर सका. वो एक गुप्त कोड की तरह था जिसे तोड़ना बहुत मुश्किल था.

फिर, 1822 में, जीन-फ्रांकोइस चैंपोलियन नाम के एक फ्रांसीसी व्यक्ति ने अंततः चित्र-लिपि को समझने (अनुवाद) करने का तरीका निकाला. किंग टुट के मकबरे में कई वस्तुओं को फिरौन के नाम के साथ चित्र-लिपि में अंकित किया गया है.

यह इस तरह दिखता था:

HIEROGLYPHS

अक्षर चित्र-लिपि

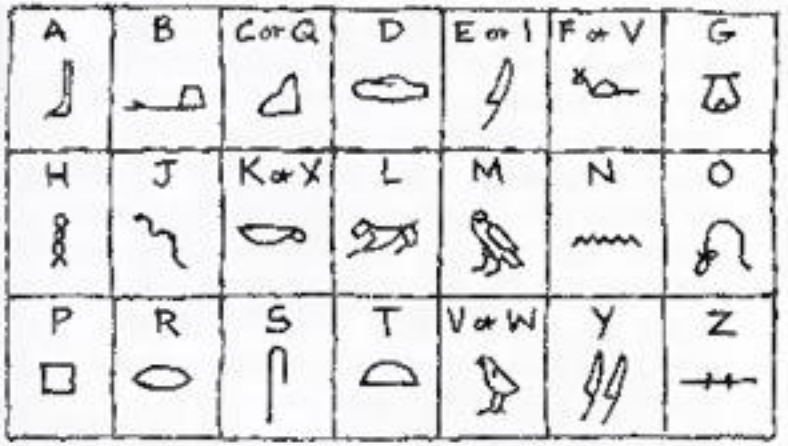

शब्द चित्र

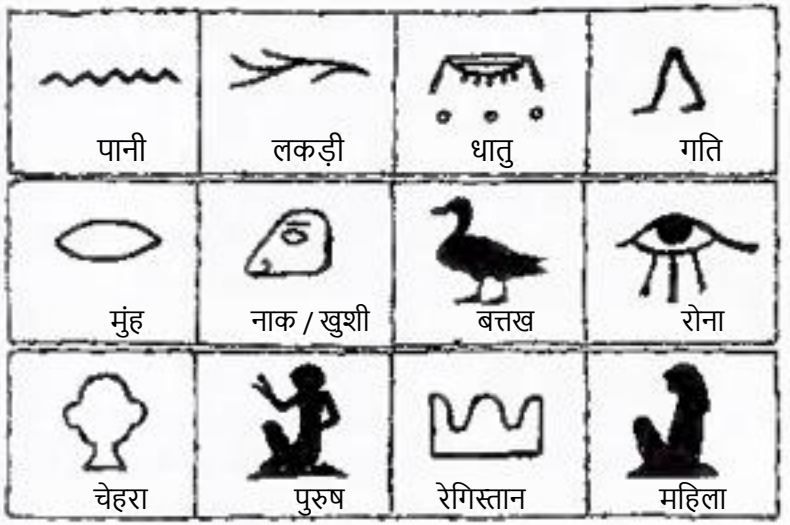

रोसेट्टा स्टोन (शिला)

यदि एक भाग्यशाली दुर्घटना नहीं होती, तो चित्र-लिपि का अर्थ अभी भी एक रहस्य ही बना रहता. 1799 में फ्रांसीसी सैनिकों को "बेसाल्ट" नामक काले पत्थर का एक बड़ा टुकड़ा मिला. पत्थर में तीन अलग-अलग लिपियों में नक्काशी थी: चित्र-लिपि, ग्रीक और एक तीसरी जिसे "डेमोटिक" कहा जाता था. पत्थर पर शब्द 196 ईसा पूर्व में टॉलेमी नामक एक फिरौन की स्तुति के लिए लिखे गए थे, उस समय तीन भाषाओं का आमतौर पर उपयोग किया जाता था ताकि जो कोई भी पत्थर को देखे वो उन्हें पढ़ सके.

1800 के दशक तक, कोई भी चित्र-लिपि को पढ़ाना नहीं जानता था, लेकिन अगर कोई यूनानी और "डेमोटिक" जानता हो तो वो उसे चित्र-लिपि से मिला सकता है, और फिर वो चित्र-लिपि की एक कुंजी बना सकता था.

जीन-फ्रेंकोइस चैंपोलियन ने आखिरकार चौदह साल तक पत्थर का अध्ययन करने के बाद चित्र-लिपि के बुनियादी नियमों का पता लगाया! अंत में, लगभग पंद्रह सौ वर्षों के मौन के बाद, प्राचीन मिस्र की भाषा को एक बार फिर से "सुना" जा सका.

पत्थर का नाम उस शहर के नाम पर "रोसेटा स्टोन" पड़ा जहां वो पाया गया था. आज "रोसेटा स्टोन" लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय में रखा है.

जीन-फ्रेंकोइस चैंपोलियन

अध्याय 4

जल्दी मौत

अमेनहोटेप के सोलह साल लंबे शासन के दौरान, साम्राज्य सुचारू रूप से नहीं चला. मिस्र के नियंत्रण वाली भूमि को टैक्स देना पड़ता था. इसका मतलब यह था कि उन्हें हर साल फिरौन के पास धन भेजना पड़ता था. उदाहरण के लिए, दक्षिण में नूबिया को सोना भेजना पड़ता था. लेबनान को दुर्लभ देवदार की लकड़ी भेजनी पड़ती थी. लेकिन मिस्र की सेना कमजोर हो गई थी. वहां से फिरौती आना बंद हो गई थी.

उसके बाद अमेनहोटेप की मृत्यु हो गई. उस समय किंग टुट बस एक बच्चा ही था. उससे साम्राज्य को फिर से मजबूत बनाने की उम्मीद कैसे की जा सकती थी?

अब असली सत्ता टुट के वज़ीर, या मुख्यमंत्री, और सेना के जनरलों में से एक के पास थी. टुट बस नाम का ही शासक था. वो सिर्फ महत्वपूर्ण समारोहों और छुट्टियों में ही दिखाई देता था.

यदि टुट अपनी किशोरावस्था के बाद कुछ समय के लिए जीवित रहता, तो शायद वो बड़ा होकर एक मजबूत और बुद्धिमान शासक बनता. या हो सकता है कि वो हमेशा अपने सलाहकारों के अधीन ही रहता.

शायद सलाहकार डरते थे कि यदि टुट के पास अधिक शक्ति होगी, तो वो अमेनहोटेप IV के अजीब तरीकों को वापस लाने की कोशिश कर सकता था. उसकी बजाए, पुराने देवताओं के मंदिरों को फिर से खोल दिया गया. और थेब्स, अमरना नहीं, एक बार फिर शाही शहर बन गया. टुट अपनी रानी के साथ वहाँ वापस रहने चला गया. हो सकता है कि उनके बच्चे हुए हों. टुट के मकबरे में उसके ताबूत के साथ दो छोटे ताबूत भी मिले थे. इनमें दो बच्चियों के शव भी थे. यह संभव है कि वे टुट के बच्चे हों.

राजा टुट और
उनकी पत्नी

हम इतना जानते हैं कि टुट ने अपनी मृत्यु के बाद फिरौन बनने के लिए कोई पुत्र को नहीं छोड़ा. और वो ऐसा काल था जब अधिकांश लोग चालीस वर्ष की आयु तक जीवित नहीं रहते थे. टुट भी बहुत कम उम्र में ही मर गया. तब वो केवल अठारह या उन्नीस का था.

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि कुछ इतिहासकारों ने टुट की मौत पर कुछ संदेह ज़ाहिर किया है. शायद वज़ीर या जनरल ने टुट से छुटकारा पाने का फैसला किया हो? (उनमें से प्रत्येक शाही परिवार में विवाह करके टुट के बाद फिरौन बन सकता था.)

आधुनिक समय में एक लोकप्रिय धारणा यह थी कि टुट की मृत्यु सिर पर चोट लगने से हुई थी. लेकिन 2003 में फिरौन के तीन हजार साल पुराने शरीर पर कैट स्कैन किए गए. दो महीनों में, सिर से पांव तक, टुट की क्रॉस-सेक्शन की इमेज ली गईं, (टुट के शरीर को डबलरोटी की एक रोटी के रूप में सोचें, प्रत्येक इमेज, ब्रेड के एक स्लाइस के रूप में होगा.) फिर सभी इमेजेज को इकट्ठा करके उनका एक तीन-आयामी मॉडल बनाया गया.

फिर, वैज्ञानिकों को उससे क्या पता चला?

उनके सिर पर चोट के निशान दिखाई दिए, लेकिन जब वे जीवित थे तो शायद ऐसा नहीं हुआ था. 1922 में जब उनकी ममी मिली तो शायद उस समय टुट की खोपड़ी घायल हो गई होगी, इसलिए वो सिर पर प्रहार से नहीं मारे गए. हालांकि, वो परीक्षण हत्या के बाकी सभी तरीकों को खारिज करने में सक्षम नहीं था. उदाहरण के लिए, यह बताने का कोई तरीका नहीं था कि टुट को जहर देकर मारा गया या नहीं. स्कैन में जहर के सबूत कोई नहीं मिले.

वैज्ञानिकों को पता चला कि टुट का एक पैर टूट गया था. हो सकता है कि इस चोट के कारण उन्हें कोई संक्रमण हुआ हो जिससे उनकी मौत हुई हो.

टुट पर परीक्षण अब समाप्त हो गए हैं. उसके शरीर की शायद अब और अधिक जांच करने की जरूरत नहीं है. परीक्षण का नेतृत्व करने वाले व्यक्ति ने कहा, "हमें उन्हें शांति से छोड़ देना चाहिए." फिर टुट को उनके ताबूत में रखा गया और उन्हें उनके दफन कक्ष में लौटाया गया.

अध्याय 5

मृत्यु के बाद का जीवन

बेशक, टुट के पास यह पता करने का कोई तरीका नहीं था कि वो युवावस्था में ही मर जाएगा. फिर भी, उसने अपनी मृत्यु से पहले ही अपने मकबरे की योजना बनाना शुरू कर दी थी.

क्यों?

प्राचीन मिस्रवासी मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास करते थे. मृत्यु के बाद का जीवन बहुत कुछ पृथ्वी पर जीवन जैसे ही होता था. शायद वो उससे भी अच्छा होता था!

मृतकों के लिए मृत्यु-लोक की यात्रा कठिन थी. सभी को वहां जाने और रहने की इजाजत नहीं थी. एक विशेष पुस्तक में जादू के मंत्र लिखे थे जो किसी विशेष व्यक्ति को मृत्यु-लोक तक पहुँचने में मदद करते थे. इस किताब का नाम था "द बुक ऑफ द डेड".

मृतकों की पुस्तक

किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद, उसकी आत्मा मृत्यु-लोक पहुंचना चाहती थी. शक्तिशाली मंत्रों और गीतों की एक पुस्तक इस यात्रा को संभव बनाने में मदद करने के लिए गढ़ी गई थी. पुस्तक को "मृतकों की पुस्तक" के रूप में जाना जाता था. समय के साथ, पुस्तक लंबी होती चली गई और अंत में उसमें लगभग दो सौ मंत्र हो गए. जिसकी औकात होती वो व्यक्ति उसे खरीद सकता था. पुस्तक अक्सर रंग में चित्रित होती थी और इसकी एक प्रति एक ताबूत के अंदर, एक मकबरे में रखी जाती थी, या फिर उसके मंत्र मकबरे की दीवारों पर लिखे गए थे.

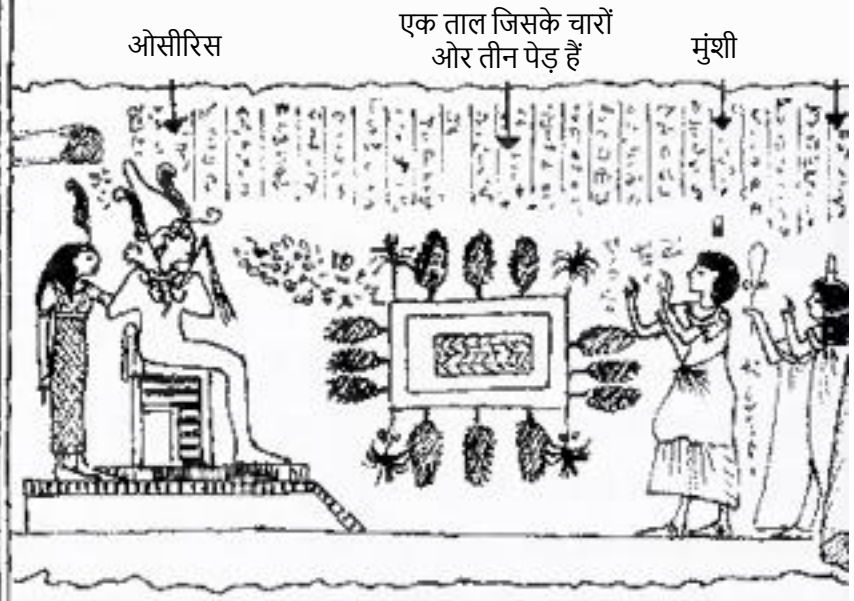

पेपीरस जो बगीचे में खड़े लोगों को ओसिरिस की प्रशंसा करते हुए दिखाता है.

पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण अध्याय में हृदय को तौलने की रस्म का वर्णन किया गया है.

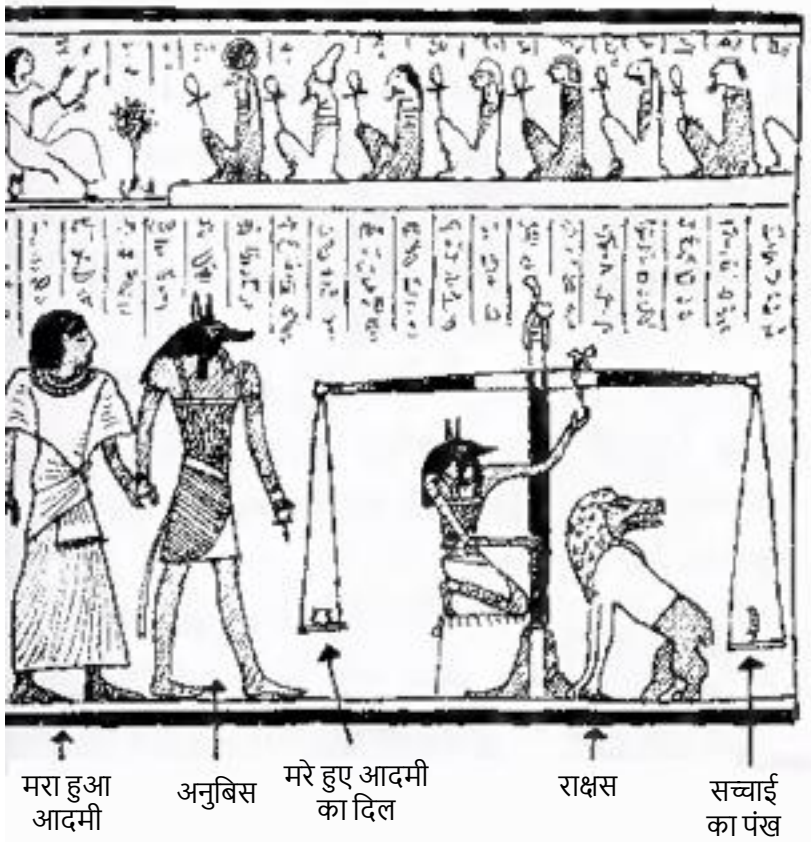

यदि मरे हुए आदमी ने झूठ बोला तो राक्षस उसका दिल खा जाएगा और वो मृत्युलोक में प्रवेश नहीं कर पाएगा.

प्रत्येक व्यक्ति, यहाँ तक कि फिरौन को भी एक परीक्षा पास करनी होती थी. अंडरवर्ल्ड में, लोगों के दिल को तराज़ू के एक पलड़े पर रखा जाता था. दूसरी तरफ एक पंख रखा जाता था. यदि व्यक्ति ने अच्छा जीवन व्यतीत किया होता था तो उसका हृदय पंख से भी हल्का होता था. और इसका मतलब था कि वो इंसान मृत्युलोक में प्रवेश कर सकता था.

मृत्युलोक में, इंसान की आत्मा पहले की तरह सभी सुखों का आनंद ले सकती थी - खाना, शराब पीना, शिकार करना, खेल खेलना, नाव की सवारी के लिए जाना आदि.

मकबरा, केवल शरीर के लिए विश्राम स्थल नहीं था. वो घर जैसा था, वहां वो सारी चीज़ें उपलब्ध थी जिसकी व्यक्ति को मृत्यु बाद के जीवन में आवश्यकता पड़ती.

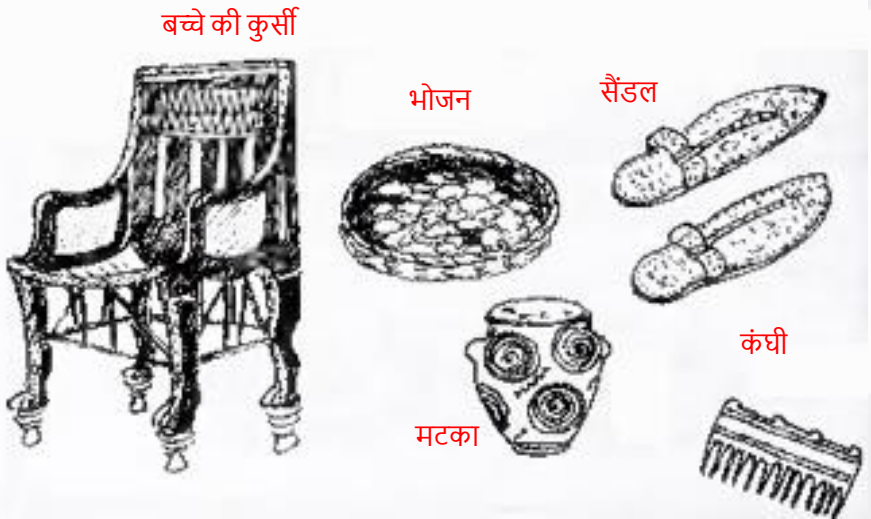

बेशक, गरीब किसानों के पास बहुत सी चीजें नहीं होती थीं. न ही वे बड़े मकबरों का खर्च उठा सकते थे. अक्सर गरीब लोग रेत में ही दबाकर दफनाए जाते थे. लेकिन एक शाही मकबरे में कई कमरे होते थे, जो सभी खजाने से भरे होते थे.

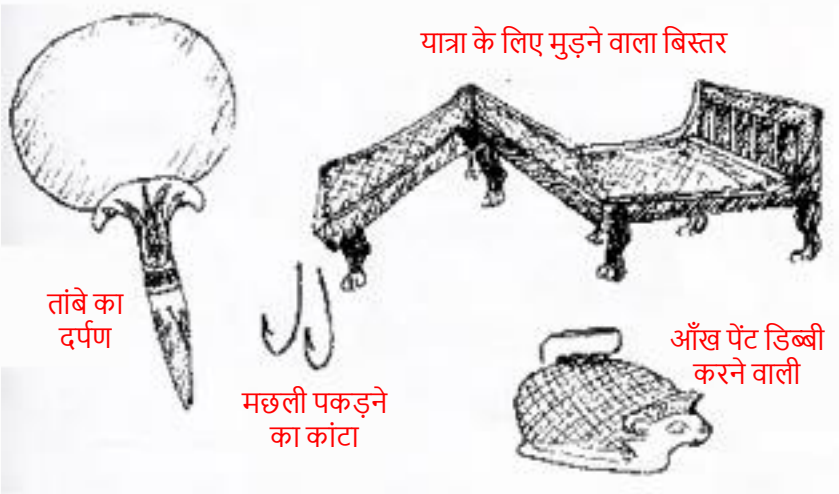

तूतनखामुन का मकबरा एक फिरौन के लिए बहुत छोटा था. उसमें केवल चार कमरे थे. क्योंकि शायद वो किसी और के लिए बनाया गया था - शायद किसी कोर्ट के सदस्य के लिए. लेकिन जब टुट की मृत्यु हुई, तो उसका अपना बहुत बड़ा मकबरा तैयार नहीं था. उसे वहां दफनाने के अलावा और कोई चारा भी नहीं था.

फिरौन के सबसे बड़े मकबरे गीज़ा में तीन पिरामिड हैं. स्फिंक्स की विशाल प्रतिमा पिरामिडों पर अपनी निगरानी रखे है.

पिरामिड, टुट के समय से बहुत पहले बनाए गए थे - शायद एक हजार साल से भी पहले.

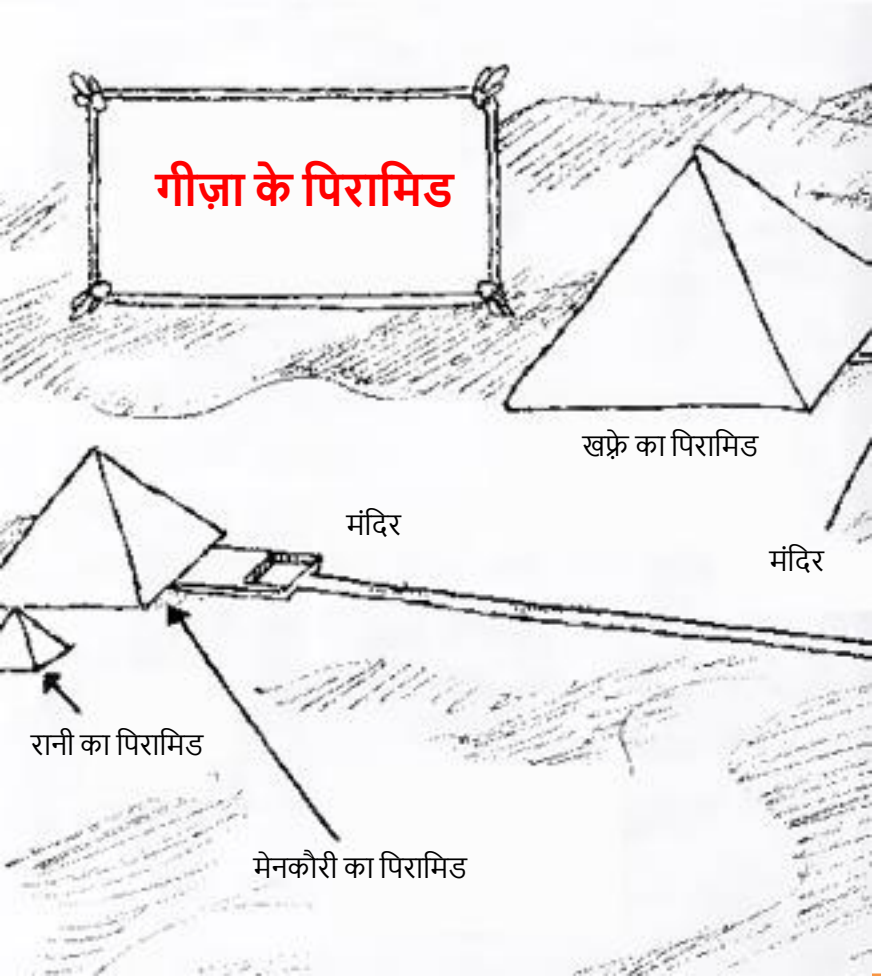

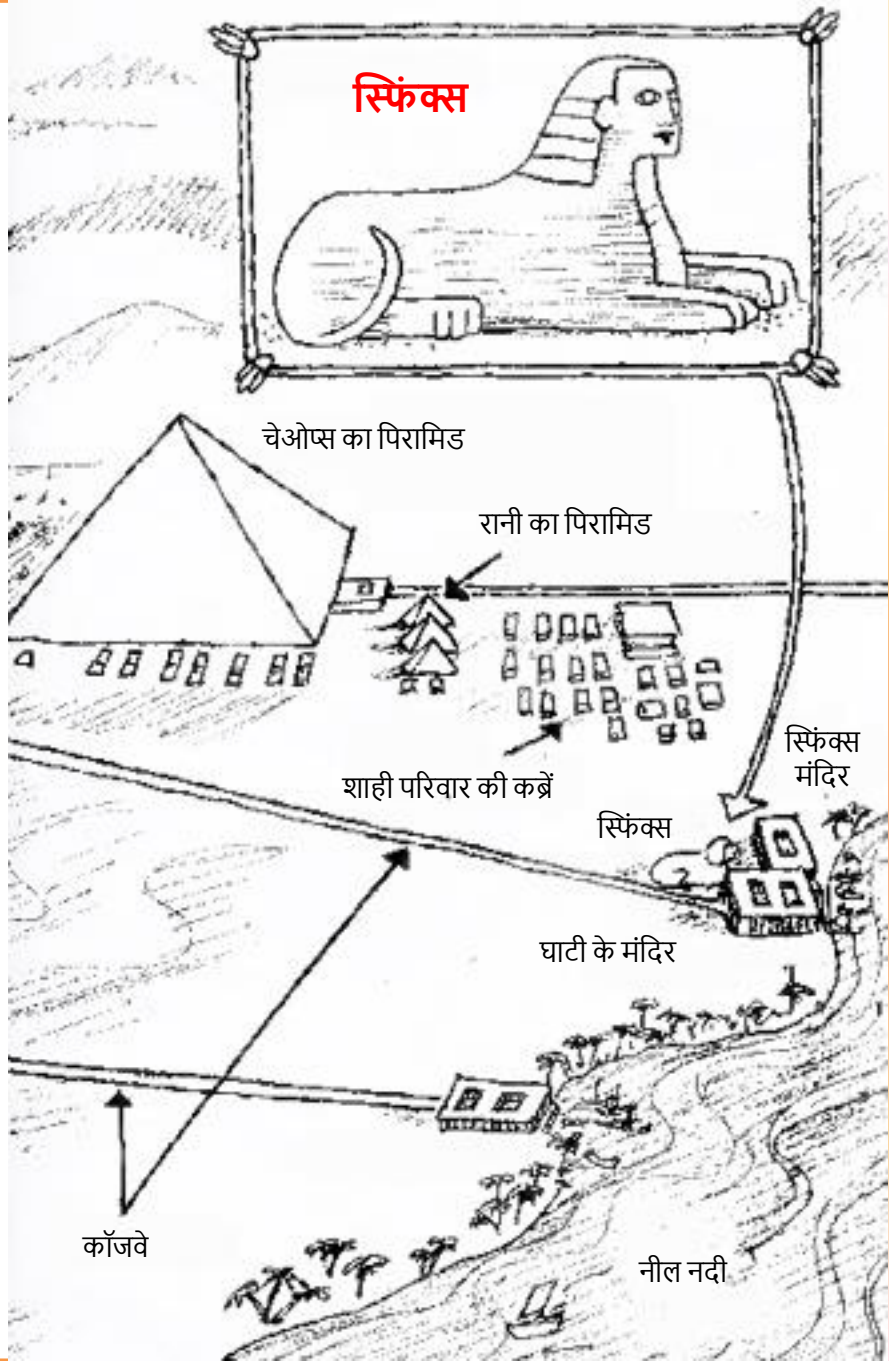

सबसे बड़ा पिरामिड चेओप्स नाम के फिरौन का था. इसे पूरा करने में लगभग एक लाख श्रमिकों को बीस वर्ष लगे थे. चेओप्स के शरीर को एक गुप्त कक्ष की गहराई के अंदर रखा गया था.

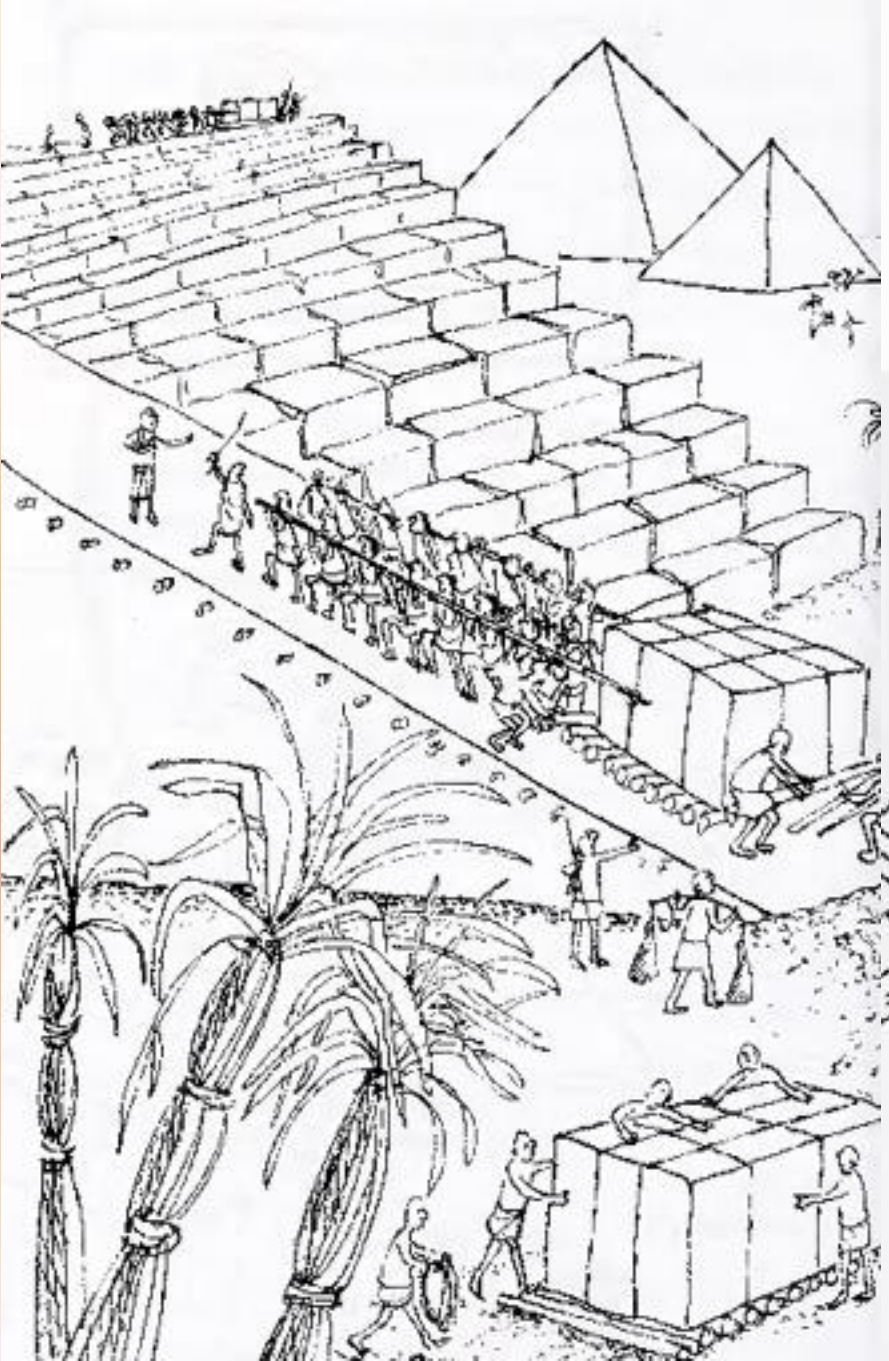

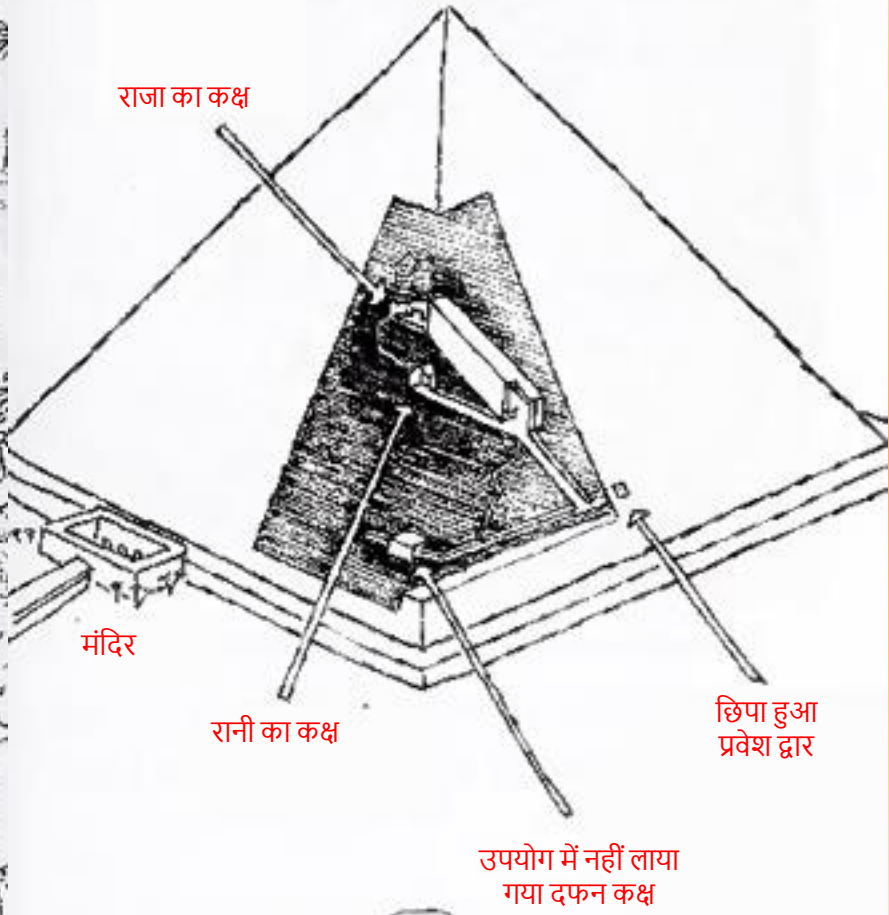

प्राचीन समय में, लोग जानते थे कि बहुत सारा खजाना फिरौन के शरीर के साथ दफनाया गया होगा. दुर्भाग्य से, पिरॅमिड लूटे जाते थे. लुटेरों ने फिरौन के बाद के जीवन के लिए बनाई गई वस्तुओं को लूटा.

बाद के फिरौन राजाओं ने लुटेरों को दूर रखने के लिए गुप्त कब्रों का निर्माण करने का फैसला किया. कब्रें, ज़मीन के नीचे चीज़ों को छिपाने के स्थान थे. लुटेरों को पकड़ने के लिए उनके पास तरह-तरह के जाल थे.

कुछ कब्रों में प्रवेश द्वार के ऊपर पत्थर के ब्लॉक रखे थे. यदि दरवाजा खोला जाता, तो एक बड़ा पत्थर गिरता और लुटेरे-डाकू को मार डालता. लुटेरों को भ्रमित करने के लिए अंदर कई झूठे कमरे भी थे. और यदि फर्श की कुछ विशेष टाइलों पर चोर कदम रखता तो शाफ्ट उन लुटेरों को मरने के लिए नीचे भेज देता.

लेकिन इस सारी प्लानिंग और सारे भ्रमों के बावजूद चोर रुके नहीं. किसी तरह, वे कब्रों को खोजने में कामयाब रहे. उन्होंने कब्रों को तोड़ा और उनकी धन-दौलत को लूटा.

1922 में होवर्ड कार्टर को टुट का मकबरा मिलने से पहले, लोग सोचते थे कि फिरौन की हर एक कब्र को लूट लिया गया होगा. इसलिए कार्टर की खोज इतनी महत्वपूर्ण घटना थी. फिरौन के शानदार खजाने के बारे में पहले तमाम किंवदंतियां थीं. पर अब लोगों के सामने सबूत था.

किंवदंतियां सच थीं.

पिरामिड

पिरामिड का आकार प्राचीन मिस्रियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था. उनका मानना था कि फिरौन सूर्य की किरणों पर चढ़कर स्वर्ग में प्रवेश करेगा. पिरामिड का आकार सूर्य की किरणों का एक प्रतीक था, जिनका फिरौन बाद में चढ़ने के लिए उपयोग करेगा. जहां पिरामिड बनाई गयीं थी वो स्थान भी बहुत महत्वपूर्ण था. वो स्थान आकाश में सबसे महत्वपूर्ण तारों के नीचे होना चाहिए था.

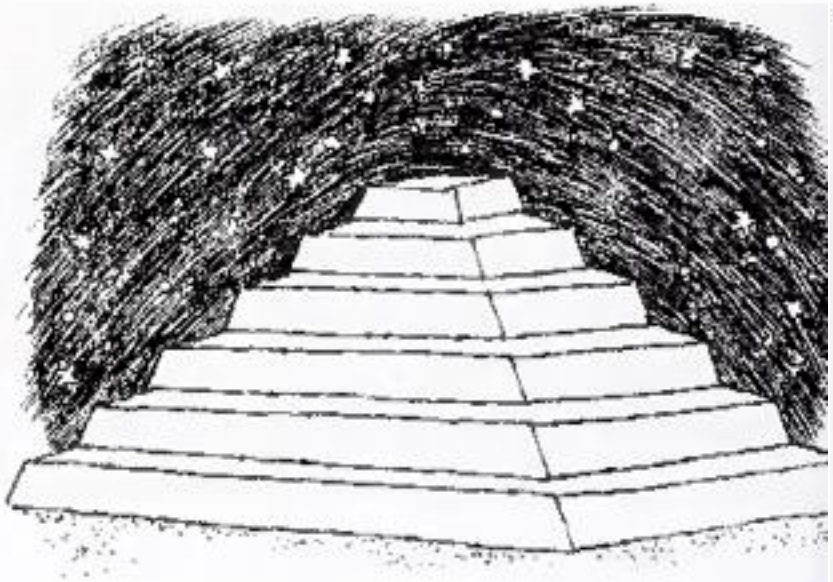

पहला पिरामिड 2611 ईसा पूर्व में बनाया गया था. वो फिरौन डीजेसर के लिए बनाया गया था. उसमें छह स्तर थे जो सीढ़ियों की तरह ऊपर उठते थे.

पहले पिरामिड में सीढ़ियां नहीं थीं को "झुका हुआ पिरामिड" कहा जाता है, को लगभग तीस साल बाद एक और फिरौन द्वारा बनवाया गया था. लेकिन वो पिरामिड बहुत ऊंचा नहीं था और निर्माण के समय उसका कोण बदल गया था इसलिए वो पिरामिड एक ओर झुका हुआ था.

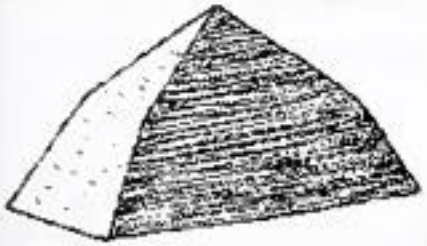

झुका हुआ पिरामिड

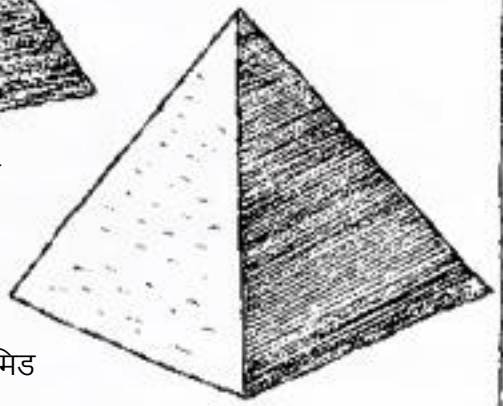

गीज़ा के
महान पिरामिड

पचास साल बाद, गीज़ा के तीन पिरामिडों में से सबसे बड़े पिरामिड को बनाया गया. उसके निर्माण में लगभग बीस लाख पत्थर के ब्लॉक (प्रत्येक का वजन पंद्रह टन) का उपयोग किया गया था. कुल मिलाकर सभी तीन पिरामिडों को बनाने में अस्सी साल से अधिक का समय लगा था! लंबे समय से यह माना जाता था कि पिरामिड बनाने के लिए गुलामों को मजबूर किया गया था. पर असलियत में निर्माण के लिए मजदूरों को काम पर रखा गया था. बिल्डिंग साइट के पास ही एक बड़ा गांव था, जहां मजदूर अपने परिवारों के साथ रहते थे. काम के दौरान किसी मज़दूर के घायल होने की स्थिति में वहां एक डॉक्टर भी मौजूद होता था.

अध्याय 6

ममी बनाना

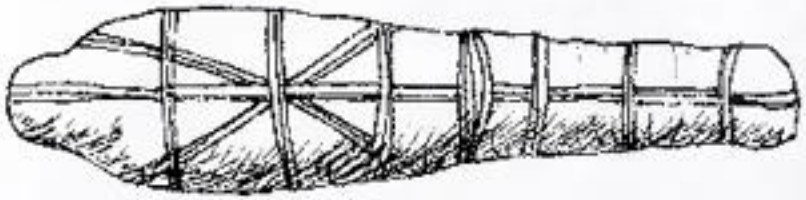

भोजन और फर्नीचर, कपड़े और आभूषण. उन सभी का उपयोग करके लोग मृत्युलोक के जीवन का आनंद लेंगे. लेकिन मृत्यु के बाद व्यक्ति को जिस चीज़ की सबसे अधिक आवश्यकता होती होगी वो उसका अपना शरीर होगा.

पर लोगों की यह मान्यता थी कि व्यक्ति की आत्मा बार-बार उसके शरीर में लौटकर आती थी. इसलिए, मिस्रवासियों ने मृत शरीर को कैसे संरक्षित किया जाए वो तकनीक सीखी थीं. वे शरीर को सड़ने से बचाना चाहते थे. वे चाहते थे कि मृत शरीर अधिक-से-अधिक लंबे समय तक चले.

उसके लिए उन्होंने मृत शरीर को पूरी तरह सुखाने की कोशिश की. उन्होंने उसे एक ममी में बदला. सदियों के प्रयास से प्राचीन मिस्रवासी, ममी बनाने में माहिर हो गए.

मृत्यु के ठीक बाद, राजा टुट के शरीर को नाव से नील नदी के पार ले जाया गया. वहां पुजारी उनका इंतजार कर रहे थे. पुजारियों का काम राजा के शरीर को ममी बनाना था.

अंतिम संस्कार का बजरा

शुरू से अंत तक, ममी बनाने में लगभग सत्तर दिन लगते थे. सबसे पहले, फिरौन के शरीर को काटना और खोलना पड़ता था. यह इसलिए करना पड़ता था ताकि अंदर के अंगों को निकाल कर हटाया जा सके. मिस्रवासी, हृदय को विचार और ज्ञान का स्थान मानते थे. राजा टुट की आत्मा को मृत्युलोक में उसके दिल की बेहद जरूरत पड़ेगी. इसलिए हृदय को शरीर में ही रहने दिया गया था.

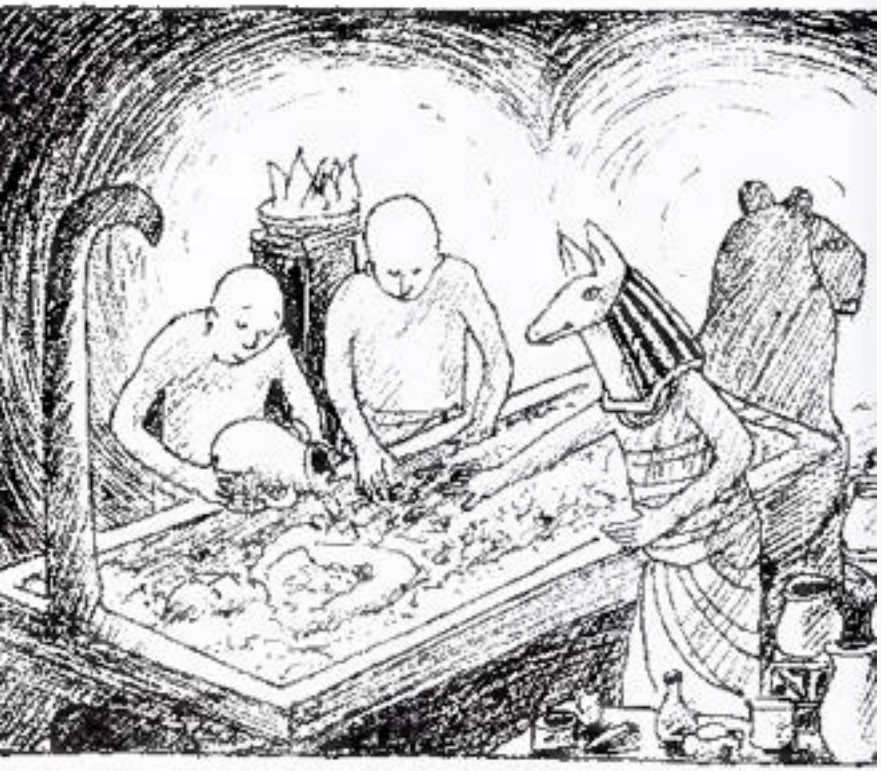

परन्तु पुजारियों ने राजा के फेफड़े, कलेजा, पेट और आंतों को निकाल दिया. प्रत्येक को एक अलग भगवान द्वारा संरक्षित एक विशेष जार में रखा गया था. बाद में, इन जारों को ममी के साथ टुट की कब्र के अंदर रखा गया.

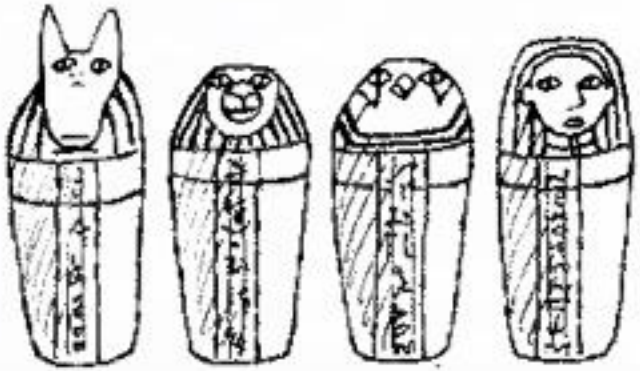

पेट फेफड़े आंत यकृत

मिस्रवासियों को नहीं लगता था कि किसी व्यक्ति का मस्तिष्क कभी किसी काम का होगा. इसलिए, नाक में से अंदर जाने वाले पतले हुक से उन्होंने टुट के मस्तिष्क को बाहर निकाला . . .और फिर उसे कूड़ेदान में फेंक दिया!

मस्तिष्क का हुक

टुट का शरीर "नैट्रॉन" में सूख रहा है.

इसके बाद टुट का खोखला शरीर सूखने को तैयार होगा. पुजारियों ने शरीर सुखाने के लिए "नैट्रॉन" नामक एक नमक का इस्तेमाल किया. लगभग चालीस दिनों तक, टुट का शरीर नैट्रॉन में पैक किया गया. धीरे-धीरे नमक ने शरीर से सारा पानी बाहर खींच लिया. फिर त्वचा, चमड़े की तरह सख्त और शुष्क हो गई.

शरीर के आकार को बनाए रखने के लिए, शरीर को सुगंधित कपड़े से भरा गया. अब शरीर लम्बे, महीन सफेद कपड़े में लपेटने के लिए तैयार था. पुजारी, फिरौन की ममी को लपेटते समय प्रार्थना करते थे. शरीर को लपेटने में पंद्रह दिन लगते थे. पुजारी कपड़ों की परतों के बीच अच्छी तकदीर के लिए कुछ "चार्म्स" भी रखते थे.

टुट के शव को लपेटा जा रहा है

कई "चार्म्स" आकर्षण आकृतियों में सोने और सुंदर रंग के पत्थरों से बने थे. कुछ दिल के आकार के होते थे. कुछ, जिन्हें स्कारब (बीटल) कहा जाता है, भृंग जैसे दिखते थे. फिर भी अन्य छोटी आँखों की तरह लग रहे होते थे. वे बुरी आत्माओं को टुट से दूर रखने के लिए रखे जाते थे.

एक बार शरीर को लपेटने के बाद फिर कपड़े की परतों को गोंद जैसी किसी चीज से ढंका जाता था. गोंद के सूखने के बाद ममी के चारों ओर एक तरह का सख्त खोल बन जाता था. उसके बाद टुट की ममी अपने अंतिम संस्कार के लिए तैयार थी.

पशु ममियां

मनुष्यों के अलावा, मिस्रियों ने कई तरह के जानवरों की ममी भी बनाईं - कुत्ते, बिल्लियाँ, पक्षी, मछली, बबून यहाँ तक कि बैल और दरियाई घोड़ों की भी! उन्होंने ऐसा कई कारणों से किया. कभी-कभी ममी चिड़िया, या गाय के पैर को, मृत व्यक्ति के भोजन के लिए कब्र में छोड़ दिया जाता था. कभी-कभी लोग अपनी मृत्यु के बाद अपने पालतू जानवरों को पीछे नहीं छोड़ना चाहते थे. इसलिए, वे अपनी बिल्लियों, कुत्तों और यहां तक कि हिरणों की भी ममी बनवाते थे.

हिरन

कुत्ता

आईबिस (पक्षी)

मगरमच्छ

मिस्रवासियों का मानना था कि कुछ देवी-देवता जानवरों के रूप में भी प्रकट हो सकते थे. उदाहरण के लिए, देवी "बस्टेट" कभी-कभी एक बिल्ली के रूप में प्रकट होती थीं. इसलिए, बिल्लियों को सम्मान देने के लिए उन्हें ममी बनाया जाता था. "बस्टेट" के एक मंदिर में हज़ारों बिल्लियों की ममी थीं.

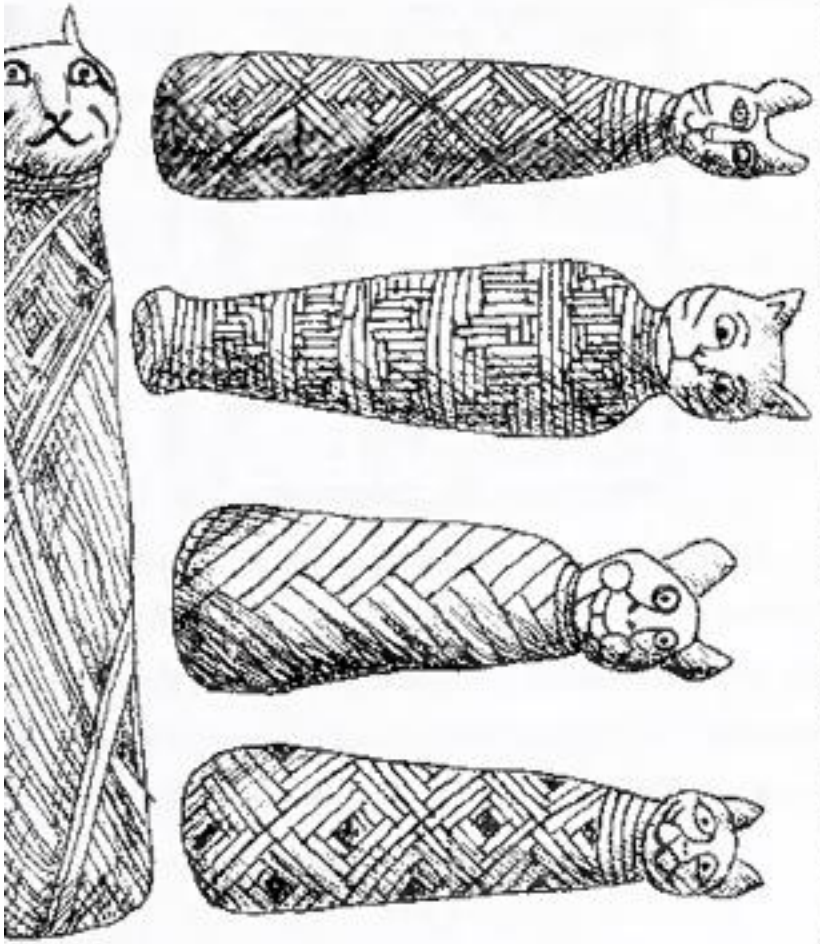

अध्याय 7

राजाओं की घाटी

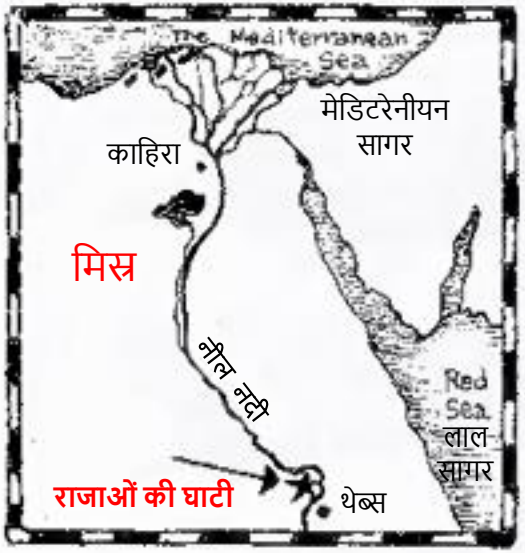

टुट के दफ़नाने वाले दिन, लोगों की एक लंबी लाइन नील नदी के उस पार नावों में उसके ताबूत का पीछा करती थी. एक बार जमीन पर रखने के बाद ताबूत (वास्तव में, वे एक-दूसरे में फिट होने वाले तीन ताबूत होते थे) को एक स्लेज पर खींचा जाता था. अब ताबूत एक विशेष शाही कब्रिस्तान की ओर जा रहा था. नील नदी के पश्चिम में इस धूल भरे, एकांत क्षेत्र को "राजाओं की घाटी" कहा जाता था.

कुछ तस्वीरों में यह इलाका चट्टान से बने प्राकृतिक पिरामिड जैसा दिखता है. बहुत से फिरौन वहीं दफ़न किए गए थे, इसलिए पुजारी वहां दिन रात पहरा देते थे. उसके पास में ही रानियों और दरबारियों के लिए एक अलग कब्रिस्तान था. उसे रानियों की घाटी कहा जाता था.

राजाओं की घाटी में परेड का मुखिया पुजारी होता था. रास्ते में वे गीत गाते थे और प्रार्थना करते थे. पुजारी में से एक ने कुत्ते के चेहरे का एक मुखौटा पहना था. वो ममियों के देवता "अनुबिस" का प्रतिनिधित्व कर रहा था.

टुट की युवा रानी पास में ही चल रही थी. उसके पीछे-पीछे महिलाओं का एक समूह था. वे सभी रो रहे थे और अपने कपड़े फाड़ रहे थे. मातम मनाने वाले ये लोग टुट की मौत पर अपना दुख व्यक्त करने के लिए वहां आए थे.

मातम करने वाले लोगों में सैकड़ों सेवक थे. वे कब्र में ले जाने के लिए तमाम फर्नीचर, भोजन और अन्य सामान ढो रहे थे. वे अपने साथ कई छोटी-छोटी मूर्तियाँ भी ले जा रहे थे जो नौकरों की तरह ही दिखती थीं.

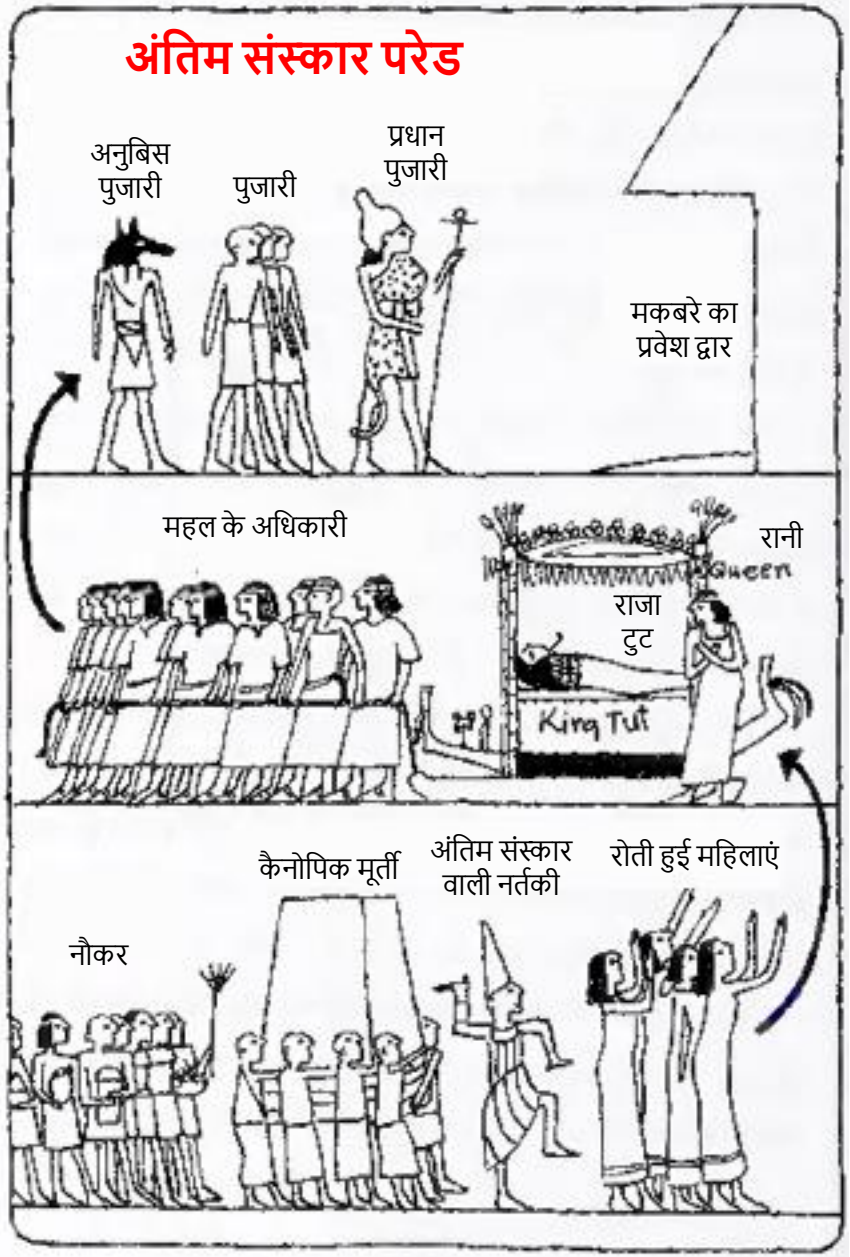

एक बार मकबरे में रखने के बाद, यह माना जाता था कि उन मूर्तियों में जान आ जाएगी. तब मृत राजा के पास उसकी देखभाल के लिए आवश्यक सेवक होंगे.

टुट के सेवकों की कुछ मूर्तियाँ

मकबरे के प्रवेश द्वार पर, टुट की ममी को सीधा खड़ा किया गया था. फिर एक बहुत ही महत्वपूर्ण समारोह का समय आ गया था. इसे "मुंह खोलना" कहा जाता था. जब प्रार्थना की जा रही थी, तब एक पुजारी ने ममी की आँखों, मुँह और कानों को छुआ. ऐसा माना जाता था कि वो जादू फिरौन को फिर से जीवित कर देगा. फिर टुट बोलने, देखने और सुनने में सक्षम होगा.

उसके बाद, केवल एक ही काम बचा था - फिरौन को उसकी कब्र के अंदर दफनाया जाना. एक बार जब टुट की ममी अपने ताबूतों में वापस आ गई, फिर उसे एक बड़े पत्थर के बक्से के अंदर रखा गया और मकबरे के अंदर छिपा दिया गया. फिर चट्टानों ने प्रवेश द्वार को सदा के लिए सील कर दिया.

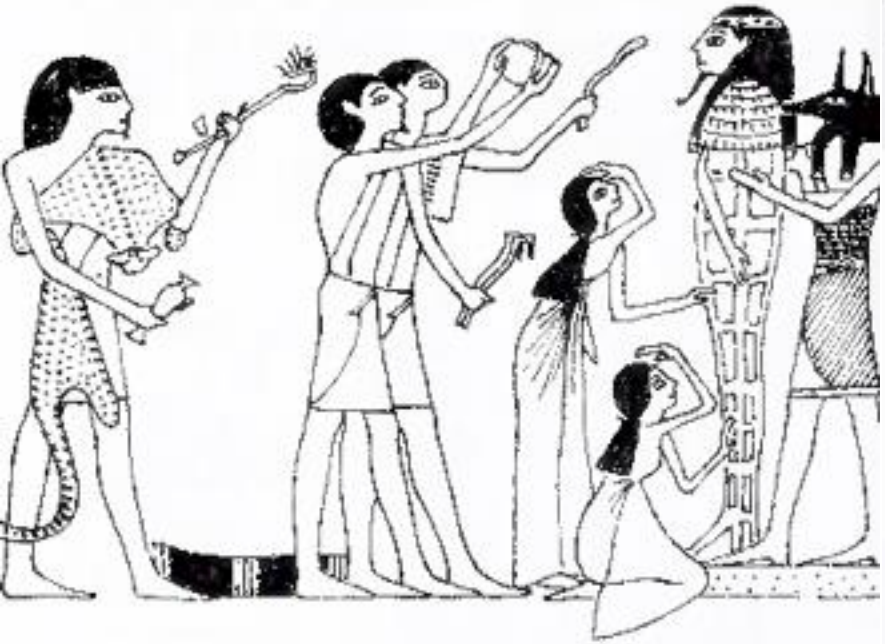

तत्पश्चात सभी शोकसभा में भाग लेने वाले सभी लोगों ने एक भव्य भोज में भाग लिया. अब सब लोग मरे हुए राजा के लिए आनन्दित थे.

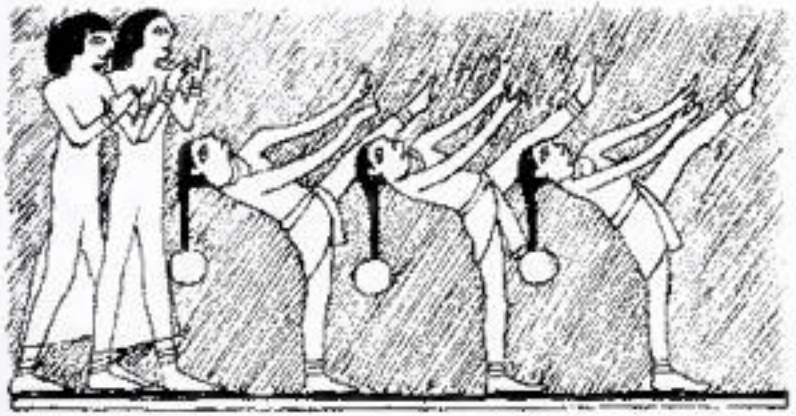

टुट, मृत्युलोक में प्रवेश करने वाला था. अब वो हमेशा जीवित रहेगा और खुश रहेगा. उन्हें यकीन था कि उसकी ममी सुरक्षित रहेगी और वो अनंत काल के लिए छिपी रहेगी.

लेकिन वे गलत थे.

अध्याय 8

ममी लूटने का उन्माद

प्राचीन लुटेरे ही मिस्र में कब्रों को लूटने वाले अकेले लोग नहीं थे.

1800 के दशक में, यूरोप के कई अलग-अलग देशों के लोग, मिस्र की यात्रा करते थे. प्राचीन साम्राज्य तब तक मर चुका था. सभी पुरानी मान्यताएं अब गायब हो चुकी थीं. चित्र-लिपि का लेखन सभी के लिए एक रहस्य बना था.

लेकिन पर्यटकों ने ग्रेट पिरामिड और स्फिंक्स का दौरा किया. उन्होंने नील नदी की यात्राएं कीं. उन्होंने पुराने मंदिरों और विशाल मूर्तियों के खंडहर देखे. वे अपने साथ उनके स्मृति चिन्ह वापस ले जाना चाहते थे. कभी-कभी वे अपने साथ एक पूरी ममी वो वापिस ले जाते थे! वे उस ममी को अन्य खरीदे स्मृति चिन्हों के साथ किसी अलग कमरे में रखते थे. वे उस सामान को संग्रहालय में भी प्रदर्शित करते थे. वे ममी को खोलकर देख सकते थे कि उसके अंदर क्या था.

उसके लिए "ममी खोलने वाली पार्टियां" आयोजित की जाती थीं. एक अंग्रेज लार्ड ने पार्टी के लिए छपे निमंत्रण कार्ड भेजे. लंदन में उनके मेहमानों को "थेब्स की एक ममी" ढाई बजे खोलकर देखने को मिली.

बर्लिन में एक जर्मन राजकुमार की पूल टेबल पर एक ममी लिपटी हुई पड़ी थी. यदि कोई व्यक्ति अकेले ममी का खर्च नहीं उठा सकता है, तो वो एक समूह का सदस्य बन सकता था. फिर समूह पैसे जमा करके एक ममी खरीद सकता था. जर्मन लोगों के एक समूह ने बिलकुल यही किया. उनमें से प्रत्येक के पास एक प्रमाण पत्र था. वो ममी के शेयरों के मालिक होने जैसा था!

इटली के एक व्यक्ति ने ग्राहकों को बेचने के लिए ममी खोजने का व्यवसाय शुरू किया. उसका नाम जियोवानी बेलज़ोनी था. कभी-कभी वह मकबरे के अंदर घुसने के लिए तोड़ने वाले बड़े हथोड़े का इस्तेमाल करता था. उसने एक दुर्घटना का वर्णन किया जो उसने अंदर अनुभव था. मशाल हाथ लिए वो अपना रास्ता महसूस करते हुए वो बैठने के लिए कोई स्थान ढूंढ रहा था. फिर वो अपने पूरे वजन के साथ जहाँ बैठा, वो एक ममी थी. "मैं टूटी हुई ममियों के बीच, हड्डियों, कपड़ों, लकड़ी के बक्सों के बीच में डूब गया. उसमें से इतनी धूल निकली कि अगले एक घंटे तक मैं हिल तक नहीं पाया."

प्राचीन, मृतकों के साथ इस तरह व्यवहार किए जाने के बारे में कहानियाँ सुनना भयानक है. . . ताकि कोई जल्दी अमीर बन सके. पर सभी लोग पैसों के लिए ममी नहीं खोज रहे थे. बहुत से लोग प्राचीन मिस्र के बारे में अधिक जानकारी में रुचि रखते थे. वे उस काल के जीवन के बारे में जानना चाहते थे. अतीत के बारे में बताने वाली वस्तुओं को खोजने में रुचि रखने वाले लोग पुरातत्वविद कहलाते हैं.

साम्राज्य का अंत

विभिन्न इतिहासकार प्राचीन मिस्र के महान साम्राज्य के अंत के लिए अलग-अलग तिथियां देते हैं. कुछ लोग कहते हैं कि "प्राचीन मिस्र' 30 ईसा पूर्व तक जा चुका था, इस समय तक अन्य देशों द्वारा मिस्र पर कई आक्रमण किए गए थे. कुछ बहुत प्रसिद्ध "विदेशियों" ने मिस्र पर शासन किया और फिर वे फिरौन बन गए. सिकंदर महान ने फारसियों से मिस्र को जीता. मिस्र के लोग इस महान यूनानी सैनिक को एक नायक मानते थे. सिकंदर के अपने एक जनरल की मृत्यु के बाद, टॉल्मी ने सत्ता संभाली.

जनरल टॉल्मी 1

सिकंदर महान

क्लियोपेट्रा

जूलियस सीज़र

शायद आपने क्लियोपेट्रा के बारे में सुना होगा. वह मिस्र की रानी थी जो 69 से 30 ई.पू. तक जीवित रहीं. जूलियस सीजर रोमन साम्राज्य का सम्राट था. रोम ने मिस्र पर कब्ज़ा किया, क्लियोपेट्रा सोचती थीं कि अगर वो सीज़र का एक बच्चा पैदा करतीं, तो शायद उनके पास अधिक शक्ति होती. लेकिन यह काम उन्होंने नहीं किया. रोमन लोग सौ साल तक सत्ता में रहे. मिस्र की पुरानी जीवन शैली लुप्त हो रही थी. चित्र-लिपि एक "मृत-भाषा" बन गई थी. चित्र-लिपि के मतलब खोजना यानी अतीत को उजागर करना, अब पुरातत्वविदों का काम बन गया था.

1800 के दशक के अंत तक, फिरौन के कई मकबरे मिले थे. परेशानी यह थी कि वे सभी खाली थे. हर पुरातत्त्ववेत्ता का सपना होता था कि वो कोई ऐसा मकबरा खोजे जिसे लूटा न गया हो. कई लोगों को वो सिर्फ एक सपना लगता था. उन्हें विश्वास नहीं था कि खजाने के साथ कहीं कोई कब्र अभी बची होगी. पर होवर्ड कार्टर व्यावहारिक रूप से एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसे लगता था कि उसे एक कब्र ज़रूर मिलेगी.

अध्याय 9

होवर्ड कार्टर

होवर्ड कार्टर का जन्म 1874 में इंग्लैंड में हुआ था. उसके पिता एक कलाकार थे, जो जानवरों की पेंटिंग बनाते थे. जब कार्टर पहली बार मिस्र आया तब वो केवल सत्रह वर्ष का था.

वह अमेनहोटेप के अमरना शहर की खोज करने वाले एक समूह का हिस्सा था. उसने खंडहरों के चित्र बनाए. कुछ समय के लिए कार्टर ने पर्यटकों को बेचने के लिए प्रसिद्ध स्मारकों के चित्र भी बनाए. कुल मिलाकर उसने मिस्र में सत्रह वर्ष बिताए.

वे जितने अधिक समय तक वहाँ रहा पुरातत्व में उसकी रुचि उतनी ही बढ़ती गई. उसे पक्का विश्वास था कि वहाँ अभी भी एक फिरौन की एक कब्र बची होगी. और वो उसे खोजने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था.

उसने अपनी खोज राजाओं की घाटी से शुरू की, जो कि आधुनिक शहर लक्सर के पास नील नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है.

प्राचीन कब्रों को चट्टान में गहराई से काटकर बनाया गया था, जिसके लंबे हॉल दफन स्थानों की ओर ले जाते थे.

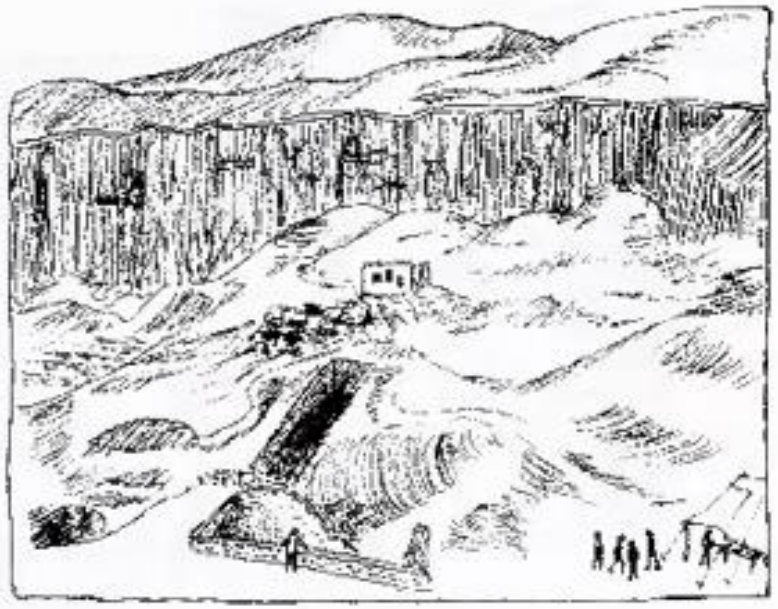

अगर होवर्ड कार्टर एक छिपे हुए मकबरे को खोजना चाहता था तो उसके लिए बहुत सारा पैसा और एक बड़ी टीम की ज़रुरत होती.

सबसे पहले, कुछ अमेरिकियों ने खुदाई के लिए पैसा दिया. फिर, 1907 में, एक अंग्रेज लॉर्ड, लॉर्ड कार्नरवोन, होवर्ड कार्टर की मदद करने के लिए सहमत हुए.

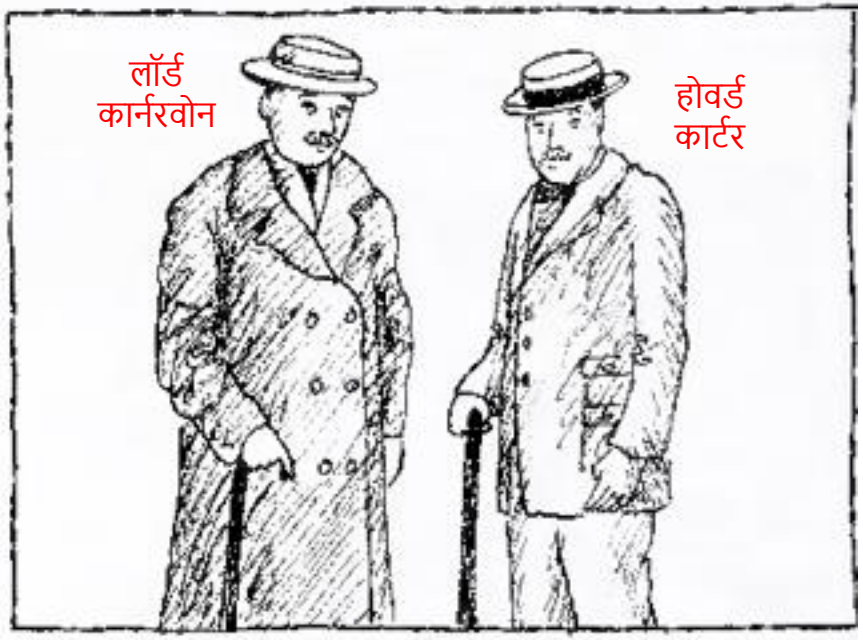

लॉर्ड कार्नरवोन को घोड़ों और कारों से प्यार था. वो पहले मिस्र केवल इसलिए आए थे क्योंकि उनके डॉक्टरों ने उन्हें वहां जाने की सलाह दी थी. उनका एक एक्सीडेंट हो गया था, और गर्म, शुष्क जलवायु उनके स्वास्थ्य लाभ के लिए अच्छी थी.

एक बार जब वे वहां पहुंचे तो उन्हें मिस्र देश के लंबे इतिहास में दिलचस्पी हो गई. जब होवर्ड कार्टर उनके पास आए, तो लॉर्ड कार्नरवोन ने उन्हें कई वर्षों तक "राजाओं की घाटी" में खुदाई करने के लिए पर्याप्त धन दिया.

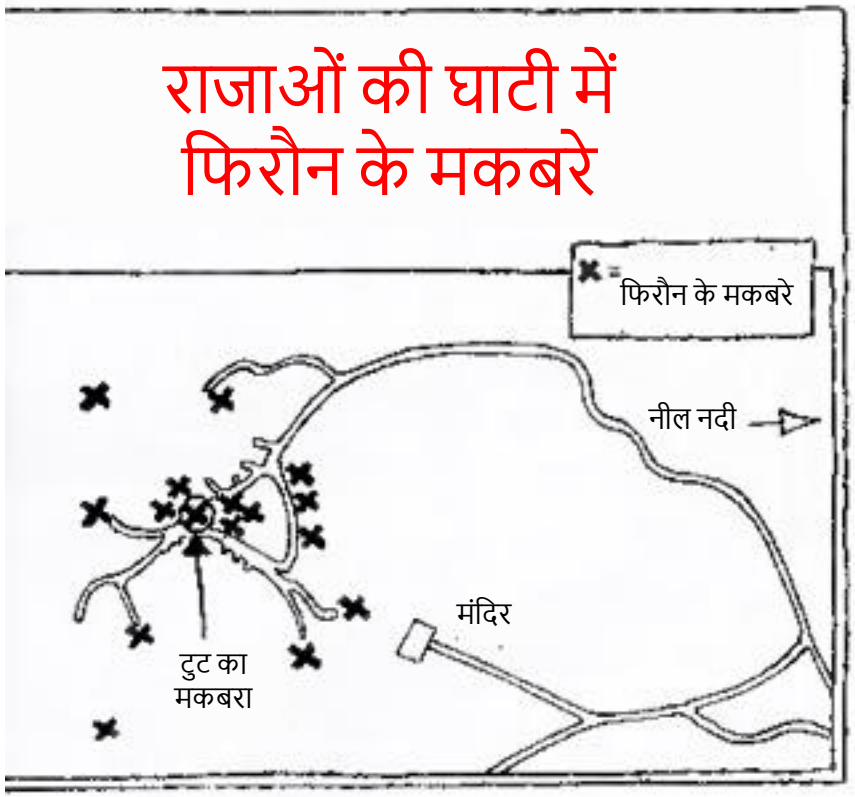

होवर्ड कार्टर एक विशेष क्षेत्र में खोज करते रहे. उन्हें यकीन था कि टुट को वहीं दफनाया गया होगा. उनका मानना था कि लुटेरों ने मकबरे को नजरअंदाज कर दिया होगा क्योंकि वो कब्रिस्तान के निचले हिस्से में स्थित था. कोई बाढ़, प्रवेश द्वार के सभी संकेतों को गायब कर सकती थी.

लेकिन कई अन्य पुरातत्वविदों को खोज के लिए वो कोई अच्छी जगह (साइट) नहीं लगी. क्योंकि उसके पास में ही एक अन्य फिरौन की खाली कब्र मिली थी. ऐसा नहीं लगता था कि फिरौन के दो मकबरे एक-दूसरे के इतने करीब होंगे.

फिर भी, कार्टर ने कभी अपना विश्वास नहीं खोया कि वो सही जगह पर था. एक बार, खुदाई में उसे एक कप मिला. दूसरी बार, उसकी टीम को सोने की कुछ पन्नियां मिलीं. उन सभी पर चित्र-लिपि में टुट का नाम अंकित था.

साल-दर-साल, कार्टर और उसकी टीम खुदाई करती रही. एक बिंदु पर खुदाई करते समय कोई ठोस चीज़ उनसे टकराई. तब सब लोग उत्तेजित हो गए. लेकिन उन्हें जो कुछ मिला वो मजदूरों की एक झोपड़ी थी.

उसके बाद, लॉर्ड कार्नरवोन खुदाई और खोज के काम को त्यागने के पक्ष में थे. भला, खोज कब तक चल सकती थी?

रामसेस VI के मकबरे

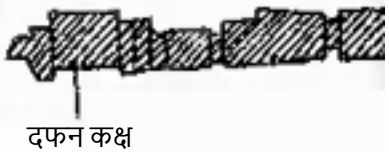

रामसेस का मकबरा टुट के ठीक ऊपर था. इसलिए टुट मकबरा का मिलना मुश्किल था!

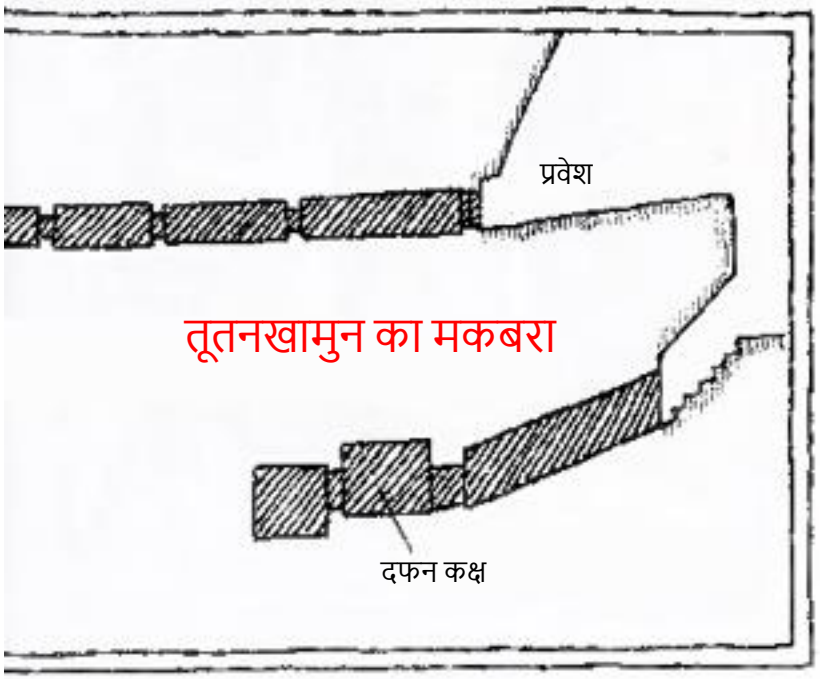

लेकिन होवर्ड कार्टर ने उनसे कुछ समय के लिए खुदाई जारी रखने का अनुरोध किया. हो सकता है, कि पत्थर की उन झोपड़ियों के नीचे कुछ और हो. 1922 के नवंबर में, टीम ने फिर से खुदाई शुरू की. कुछ दिनों के बाद उन्हें एक सीढ़ी मिली. पर वो कोई बहुत महत्वपूर्ण सुराग नहीं था.

लेकिन वो सीढ़ी सीधे चट्टान में कटी हुई थी. फिरौन की कब्रें भी चट्टान में कटी हुई थी.

और भी आश्चर्यजनक, उस सीढ़ी के बाद एक और सीढ़ी थी और फिर एक और. होवर्ड और उसकी टीम ने एक गुप्त सीढ़ी का पता लगाया जो एक दरवाजे की ओर जाती थी.

लेकिन उसके पीछे क्या था?

बस टीम का हर सदस्य सीढ़ी के पीछे के दरवाजे को खोलना चाहता था. लेकिन होवर्ड कार्टर ने इसे उचित नहीं समझा. लॉर्ड कार्नरवोन भी उस मौके पर वहां होना चाहिए था. लेकिन लॉर्ड कार्नरवोन उस समय बहुत दूर इंग्लैंड में थे. होवर्ड कार्टर ने अपनी टीम से कहा कि उन्हें दरवाज़ा खोलने से पहले लॉर्ड कार्नरवोन की प्रतीक्षा करनी होगी.

बेशक, जैसे ही उन्हें यह रोमांचक समाचार मिला, लॉर्ड कार्नरवोन तुरंत मिस्र के लिए निकल पड़े. वर्तमान में लंदन से काहिरा के लिए उड़ान भरने में उन्हें सामान्यतः लगभग पांच घंटे का समय लगता. पर उस समय, ज़्यादा हवाई-जहाज़ नहीं थे. लॉर्ड कार्नरवोन को कार्टर की टीम तक पहुंचने में कितना समय लगा? दो सप्ताह!

लेकिन अंत में लॉर्ड कार्नरवोन मिस्र पहुंचे. उनकी बेटी भी साथ में उनके साथ आई. अब होवर्ड कार्टर दरवाजे के दूसरी तरफ क्या था यह पता करने वाले थे.

लॉर्ड कार्नरवोन

लॉर्ड कार्नरवोन का पूरा नाम जॉर्ज एडवर्ड स्टैनहोप हर्बट था, यह नाम बड़ा जबड़ातोड़ नाम था! वो कार्नरवोन के पांचवें अर्ल थे. कार्नरवोन, 1866 में एक अंग्रेज कुलीन घर में जन्मे थे, जिनसे पास बहुत सारा पैसा था. और उन्होंने 1922 में टुट के मकबरे की खोज के लिए कार्टर को खुदाई के लिए धन दिया. केवल कुछ महीने बाद, लॉर्ड कार्नरवोन की अचानक मृत्यु हो गई. मृत्यु का संभावित कारण एक संक्रमित मच्छर का काटने था. लेकिन बहुत से लोगों का मानना था कि लॉर्ड कार्नरवोन "तूतनखामुन के अभिशाप" का शिकार बने. उन्हें यकीन था कि वो इसलिए मरे क्योंकि उन्होंने फिरौन के मकबरे को परेशान किया था. उनकी मृत्यु ने अन्य "ममी-शाप" की कई अफवाहों को जन्म दिया.

अध्याय 10

हर जगह सोना

जब पत्थर का दरवाजा खोला गया, तो उसके आगे चट्टानों और कंकड़ से भरा एक रास्ता था. अंत में एक और दरवाजा था. होवर्ड कार्टर ने उसमें छेद किया. उसने अंधेरे में देखने के लिए एक टिमटिमाती मोमबत्ती को अपने हाथ में पकड़ रखा था.

उसने क्या देखा?

कार्टर ने जो देखा उसे उन्होंने इन शब्दों में बयां किया, "वो मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ दिन था, मेरी ज़िंदगी का सबसे अद्भुत दिन!"

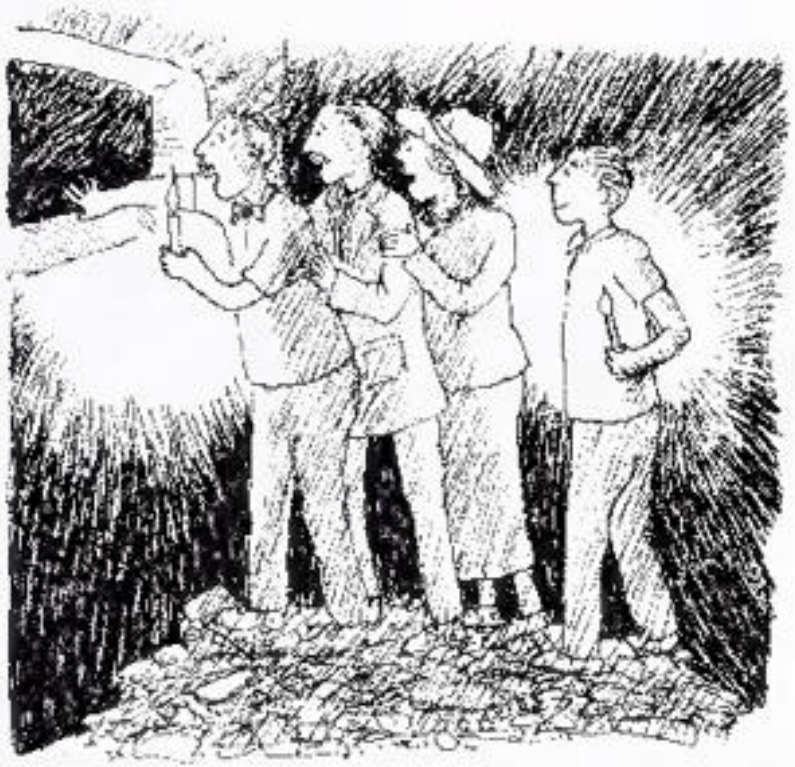

"शुरू में मैं कुछ भी नहीं देख सका ... लेकिन कुछ देर में जैसे-जैसे मेरी आंखें प्रकाश की आदी होती गईं, कमरे की धुंध में मुझे धीरे-धीरे अजीब जानवरों, मूर्तियों और सोना दिखने लगा. हर जगह सोने की चमक थी ... .. मैं आश्चर्य से पागल हो गया."

लॉर्ड कार्नरवोन वहां पर अपनी बेटी के साथ थे. साथ में कार्टर का एक दोस्त भी था. वे सभी अंधेरे गलियारे में थे. लॉर्ड कार्नरवोन ने होवर्ड कार्टर को पुकारा, "क्या तुम्हें कुछ दिखाई दे रहा है?"

होवर्ड कार्टर ने उत्तर दिया, "हां, अद्भुत चीजें!"

होवर्ड कार्टर का सपना सच हो गया था. उसे वो मिला था जिसकी उसे लम्बे अर्से से तलाश थी: किंग टुट का मकबरा.

उसने वहां कौन सी अद्भुत चीजें देखीं?

दो उलटे रथ थे. एक सिंहासन. तीन बड़े सोफे जिनकी किनारों पर जानवरों के आकार की घुमावदार नक्काशी थी. लिनन के गद्दे के साथ एक बिस्तर था. राजाओं की आदमकद मूर्तियाँ भी थीं.

हर तरफ चीजों का ढेर लगा हुआ था. विभिन्न आकृतियों और आकारों के फूलदान और बेंत थे. एक बक्से में राजा की हजामत बनाने के उपकरण थे. अन्य बक्सों में टुट के खाने के लिए मांस था.

और दाईं ओर ख़ज़ाने का एक टीला था. होवर्ड कार्टर को एक और दरवाजा दिखाई दिया. वो किसलिए था? और भी कुछ कमरे थे! और भी खजाना था!

यह पहला कमरा एंटेचैम्बर था. अगले दिन, कार्टर और कार्नरवॉन और उनकी बेटी वहां पर लौटे. इस बार वे बिजली के लैंप लेकर घुसे. वे चारों ओर बेहतर नज़र डालना चाहते थे.

एक दीवार में छेद था. उसमें से झाँककर कार्टर दूसरे कमरे में देख सकता था. इसे "एनेक्स" के रूप में जाना जाने लगा. एनेक्स में एंटेचैम्बर की तुलना में कहीं अधिक सामान था. फूलदान और गेम बोर्ड जैसी छोटी-छोटी चीजें. और सब कुछ फर्श पर ऐसे पड़ा था जैसे उसे वहां फेंका गया हो. होवर्ड कार्टर ने महसूस किया कि, बहुत पहले, लुटेरे निश्चित रूप से उस कब्र में आए होंगे. लेकिन यह बताने का कोई तरीका नहीं था कि वे अपने साथ क्या-क्या लेकर चम्पत हुए.

एनेक्स के खजाने

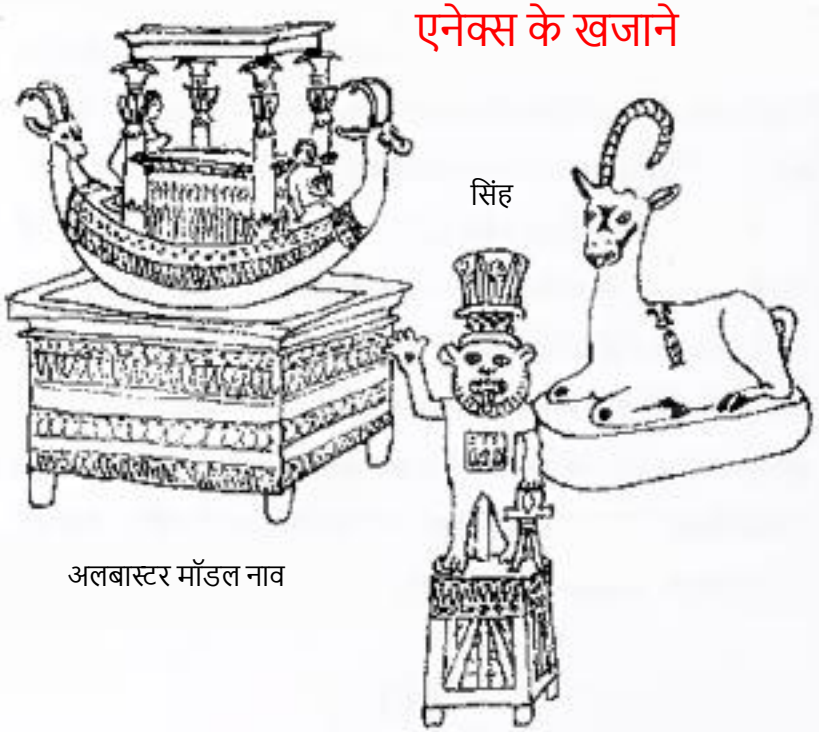

अलबास्टर मॉडल नाव

कुल मिलकर मकबरे में चार कमरे थे. वे इस तरह से थे.

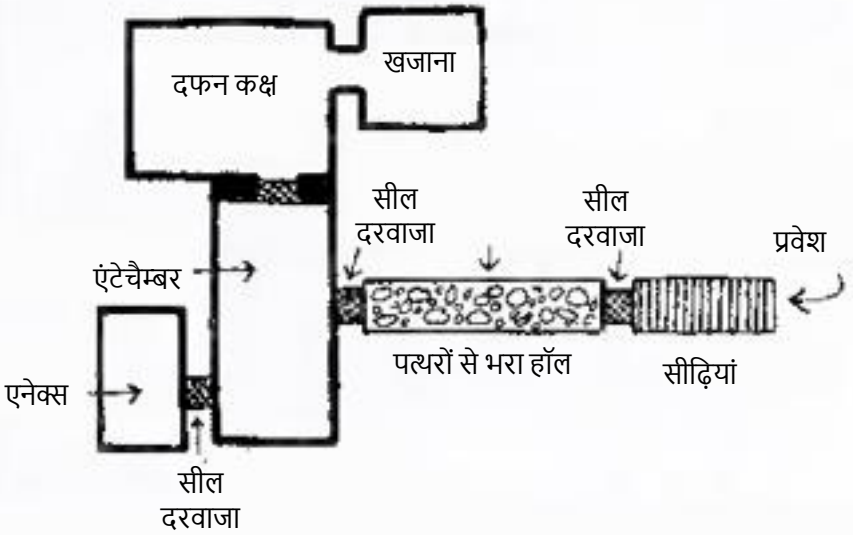

एक और छोटे से कमरे को ट्रेजरी कहा जाता था. अन्य चीजों के अलावा उसमें एक संदूक था जिसमें टुट के आंतरिक अंगों के जार और बेबी ममी के दो छोटे ताबूत रखे थे. सबसे महत्वपूर्ण कमरा दफन कक्ष था. यहीं पर टुट की ममी को रखा गया था. लेकिन किसी को नहीं पता था कि क्या लुटेरे दफन कक्ष में भी घुसकर चोरी करके ले गए थे?

अध्याय 11

राजा से मिलन

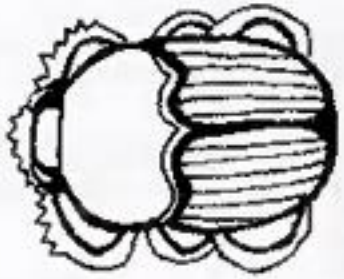

किंग टुट भाग्यशाली थे. जब तक होवर्ड कार्टर ने किंग टुट के दफन कक्ष में प्रवेश नहीं किया, तब तक उनकी ममी को कभी किसी ने परेशान नहीं किया था. तीन हजार से अधिक वर्षों से उस पर किसी की नजर तक नहीं पड़ी थी.

दफन कक्ष में, कार्टर ने जो पहली चीज़ देखी, वह एक विशाल सोने का कैबिनेट (अलमारी) था. उसके अंदर एक बड़ा पत्थर का बॉक्स था. और उसके अंदर बाहरी ममी का खोल था. तीनों खूबसूरत ममी केस, एक साथ बहुत कसकर फिट बैठते थे. सबसे भीतर वाला खोल ठोस सोने का था - उसका भार दो सौ पाउंड से अधिक था!

एक-दूसरे में फिट होने वाली तीन ममी

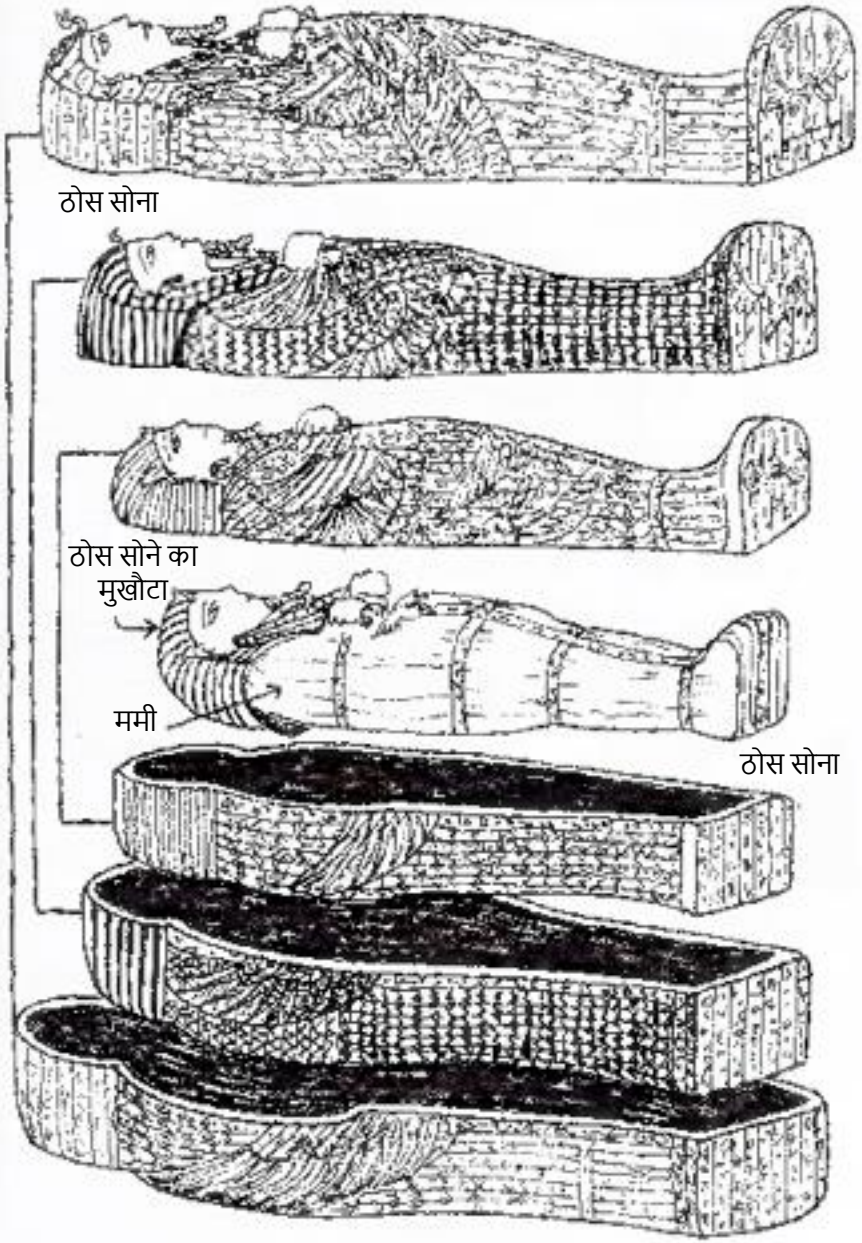

जब होवर्ड कार्टर ने उसका ढक्कन उठाया, तो अंदर कपड़े से ढकी हुई राजा टुट की ममी थी. कार्टर ने उसके ऊपर रखा सोने का मुखौटा उतार दिया. उन्होंने उसे अब तक देखी गई सबसे खूबसूरत कलाकृतियों में से एक बताया.

फिर उन्होंने ध्यान से कपड़े की पट्टियों को एक-एक करके हटाया. अंत में सबसे रोमांचक क्षण आया. अब हॉवर्ड कार्टर, राजा टुट के एकदम आमने-सामने थे. फिरौन का चेहरा अभी भी युवा और शांत लग रहा था.

पास में ही सफेद पत्थर से बना एक संदूक था जिसे अलबास्टर कहा जाता था. उसके अंदर जार थे जिनमें फिरौन के अंग रखे हुए थे. उन अंगों को पुजारियों ने बहुत पहले उनके शरीर में से निकाला था. प्रत्येक जार का एक ढक्कन था जिस पर एक देवता का सिर बना था.

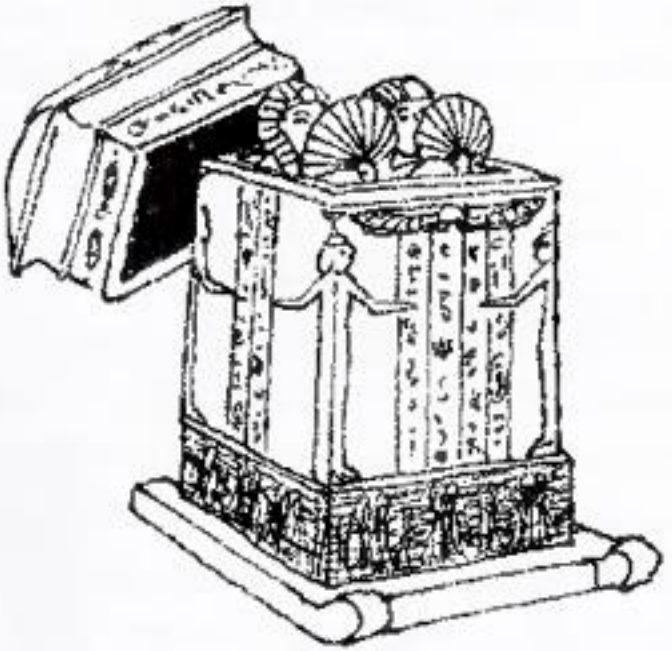

टुट के मकबरे के खजाने को मिस्र के काहिरा के एक संग्रहालय में भेजा गया. लेकिन होवर्ड कार्टर ने राजा टुट की ममी को वहां नहीं भेजा. वो ममी शाही दफन कक्ष में रही, जहां वो पहले से ही थी. वो अभी भी वहीं रहती है ... शांति से.

अध्याय 12

किंवदंती अभी भी ज़िंदा है!

होवर्ड कार्टर द्वारा मकबरे की खोज के तुरंत बाद, डरावनी कहानियाँ सुनाई जाने लगीं. शाप के बारे में कहानियाँ. कई प्राचीन मिस्र के मकबरों के प्रवेश द्वार पर चित्र-लिपि में इस प्रकार की चेतावनी लिखी थी. बेहतर होगा कि लोग चेतावनियों को पढ़कर मकबरे से दूर रहें. क्योंकि जिसने भी मकबरे में प्रवेश करने की हिम्मत की, उसे कड़ी सजा भुगतनी पड़ेगी.

टुट के मकबरे के खुलने के कुछ महीने बाद ही लॉर्ड कार्नरवोन की मृत्यु हो गई. उनकी मृत्यु का संभावित कारण एक ज़हरीले कीड़े का काटना था. लेकिन कई लोगों का मानना था कि वो एक श्राप के कारण मारा था. टुट उससे बदला ले रहा था.

लेकिन अगर वो सच होता, तो राजा टुट, क्या होवर्ड कार्टर से नाराज़ नहीं होते? फिर भी होवर्ड कार्टर 1939 तक जीवित रहे और प्राकृतिक कारणों से उनकी मृत्यु हुई.

कुछ लोगों के लिए, श्राप की कहानियाँ प्राचीन मिस्र के रहस्य को और बढ़ा देती हैं. लोगों को डरना पसंद आता है. शायद इसलिए ममियों के बारे में डरावनी फिल्में इतनी लोकप्रिय हैं.

प्राचीन मिस्र हमारी आज की दुनिया से बहुत अलग था. लेकिन वहां एक शांतिपूर्ण दुनिया थी. वहां एक बड़ी सुंदर दुनिया थी. प्राचीन मिस्र के लोग जीवन से बेहद प्यार करते थे, उन्हें उम्मीद थी कि उनका जीवन हमेशा के लिए चलता रहेगा - वो चिरंजीवी होगा.

आज राजा टुट के कीमती सामान को देखने के लिए लोग भाग्यशाली हैं, उन्हें यह बात याद रखना चाहिए.

प्राचीन मिस्र का लंबा इतिहास

इतिहासकारों ने प्राचीन मिस्र और फिरौन के शासन को समय-समय पर साम्राज्यों में विभाजित किया. पुराना साम्राज्य जो 2575 ई.पू. में था वो 4,500 साल पहले—लगभग चार सौ साल तक चला. मध्य साम्राज्य की शुरुआत 1975 ई.पू. में हुई और वो तीन सौ से अधिक वर्षों तक चला. नया राज्य 1539 ई.पू. से 1075 ई.पू. तक था. राजा टुट ने नए साम्राज्य के दौरान शासन किया.

इन प्रमुख अवधियों के बीच ऐसे काल भी थे जब मिस्र किसी एक फिरौन द्वारा शासित एक संगठित साम्राज्य नहीं था. इतिहासकार इन्हें "मध्यवर्ती अवधियां" बुलाते हैं.

साम्राज्यों और "मध्यवर्ती अवधियों" के भीतर राजवंश हैं. राजवंशों की पहचान तब होती थी जब कोई एक निश्चित परिवार सत्ता में होता था. एक राजवंश में आमतौर पर कई राजा होते थे. नए साम्राज्य के दौरान, राजा टुट अठारहवें राजवंश के बारहवें राजा थे.

अंत के काल (715-332 ईसा पूर्व) के दौरान, मिस्र कई अलग-अलग देशों के शासन के आधीन आया और उसने अपनी बहुत सारी शक्ति खो दी. उसके बाद ग्रीक-रोमन काल (332. ईसा पूर्व-ए.डी. 395) आया और अंत में, 30 ईसा पूर्व में, मिस्र, रोमन साम्राज्य का एक प्रांत बन गया. 1,500 से अधिक वर्षों के बाद, उन्नीसवीं शताब्दी में ही कोई मिस्रवासी, मिस्र का शासक बना.

समय रेखा - मिस्र और राजा तूतनखामुन का जीवन

5000 ईसा पूर्व — नील नदी के किनारे मिस्र की सबसे पुरानी बस्तियाँ बनीं

3000 ईसा पूर्व — ऊपरी और निचले मिस्र के राज्य एक हो गए

3100 ईसा पूर्व — चित्र-लिपि का सबसे पुराना प्रमाण

2500 ईसा पूर्व — गीज़ा में ग्रेट स्फिंक्स का निर्माण

2600 ईसा पूर्व — गीज़ा के पिरामिडों का निर्माण शुरू

1550 ईसा पूर्व — कर्णक के मंदिर का निर्माण शुरू

1554 ईसा पूर्व — हत्शेपसट पहली महिला फिरौन बनी

1380 ईसा पूर्व — लक्सर का मंदिर बना

1352 ईसा पूर्व — राजा अमेनहोटेप ने अपना शासन प्रारंभ किया

1343 ईसा पूर्व — किंग टुट का जन्म

1336 ईसा पूर्व —अमेनहोटेप की मृत्यु; टुट राजा बना

1325 ईसा पूर्व — किंग टुट की लगभग उन्नीस वर्ष की आयु में मृत्यु हुई

1325 ईसा पूर्व — टुट की मृत्यु के बाद वज़ीर राजा बना

1100 ईसा पूर्व — ऊपरी और निचले मिस्र का विभाजन

332 ईसा पूर्व — सिकंदर महान ने मिस्र पर विजय प्राप्त की

196 ईसा पूर्व — रोसेटा पत्थर के शिलालेख खुदे

30 ईसा पूर्व — मिस्र, रोमन साम्राज्य का हिस्सा बना

969 ईसा के बाद — काहिरा को मिस्र की राजधानी के रूप में स्थापित किया गया

1953 — मिस्र को गणतंत्र घोषित किया गया

विश्व की समयरेखा

3500 ईसा पूर्व — मिट्टी-ईंट के घरों के गांव सबसे पहले मेसोपोटामिया में बसे

3200 ईसा पूर्व — मेसोपोटामिया में रिकॉर्ड रखने के लिए इस्तेमाल किए गए चित्रलेख

2000 ईसा पूर्व — पहले पहिए वाले वाहनों का उपयोग शुरू हुआ

1860 ईसा पूर्व — यूरोप में कांस्य युग की शुरुआत

1860 ईसा पूर्व — वेल्स में स्टोनहेंज का निर्माण की शुरुआत

1830 ईसा पूर्व — पहले बेबीलोनियाई राजा का शासन

1487 ईसा पूर्व — मोज़ेज़ मिस्र से भागा

1400 ईसा पूर्व — पूर्वी अफ्रीका में लौह युग की शुरुआत

700 ईसा पूर्व — चीन की महान दीवार के निर्माण की शुरुआत

776 ईसा पूर्व — ग्रीस में पहला ओलंपिक खेल

476 ईसा पूर्व — चीन की महान दीवार का निर्माण समाप्त

438 ईसा पूर्व — पार्थेनन, एथेंस, (वर्तमान ग्रीस) में बनाया गया

395 ईसा पूर्व — मिस्र, बैजान्टियम द्वारा नियंत्रित

438 ईसा पूर्व — मिस्र, इस्लामी राज्य बना

641 ई. — जीन-फ्रेंकोइस चैंपोलियन ने रोसेटा स्टोन का अनुवाद किया

1874 ई. — होवर्ड कार्टर का जन्म इंग्लैंड में हुआ

1922 ई. — होवर्ड कार्टर ने राजा टुट के मकबरे की खोज की

समाप्त